सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 8 ● अंक: 298 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शुक्रवार, 9 दिसम्बर, 2022
मूल्य ₹ 3/-

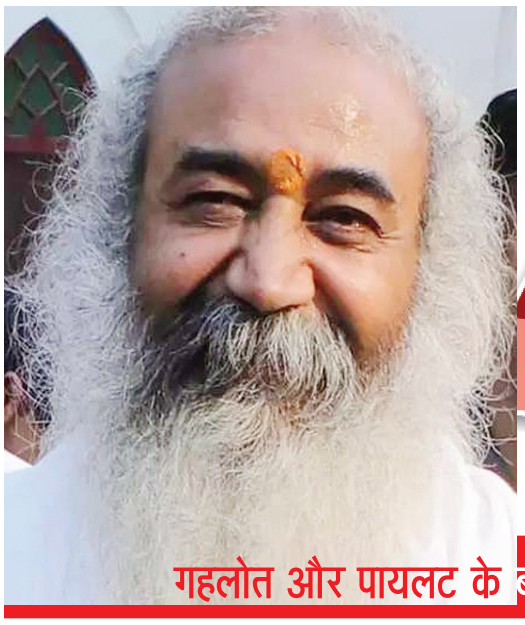

अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो पहले सूरज की तरह जलो।
-एपीजे अब्दुल कलाम

गहलोत और पायलट के बीच आग में... 8 | उत्तर प्रदेश में गठबंधन की... 3 | हिमाचल: चार साल बाद कांग्रेस... 7

भाजपा एमसीडी, हिमाचल और उपचुनाव के नतीजों से परेशान, 2024 के लिए नए सिरे से मंथन में जुटी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। भारतीय जनता पार्टी के लिए साल 2022 की शुरूआत जहां खुशियों की सौगात लेकर आयी थी, वहीं दिसबंर जाते-जाते बड़ा गम दे गया। दिल्ली एमसीडी व हिमाचल के चुनाव में करारी हार के साथ ही यूपी समेत पांच राज्यों के उपचुनाव में पार्टी को अधिकांश जगह पराजय का मुंह देखना पड़ा। गुजरात और रामपुर का परिणाम जरूर कुछ राहत देने वाला रहा। मगर बाकी जगहों के नतीजों ने भाजपा की गुजरात में हुई बड़ी जीत की खुशी को भी काफूर कर दिया। ऐसे में पार्टी के समर्थक दिल्ली से यूपी तक जीत का जश्न मनाने से भी वंचित रह गए।

यूपी से दिल्ली तक जश्न नहीं मना पाए समर्थक, गुजरात और रामपुर के रिजल्ट से राहत तो मिली पर खुशी नहीं

दिसबंर के पहले सप्ताह के आखिरी दिन बुधवार को दिल्ली एमसीडी चुनाव के नतीजों में भाजपा पर बुध भारी रहा। आम आदमी पार्टी के हाथों एमसीडी में जहां करारी हार झेलनी पड़ी, वहीं राज्य की लोकल राजनीति से झाड़ू ने पूरी तरह भाजपा का सफाया कर दिया। 15 साल से यहां काबिज भाजपा के हाथ से दिल्ली मेयर की सीट भी चली गई। हालांकि भाजपा नेताओं की ओर से जोड़-तोड के दावे किए जा रहे हैं, लेकिन उनमें अभी दम दिखाई नहीं दे रहा है। इसी माह के दूसरे सप्ताह की शुरुआत भी भाजपा के लिये कहीं खुशी कहीं गम वाली रही। बुध के बाद गुरु भी भाजपा पर भारी रहा। एमसीडी चुनाव नतीजों के अगले ही दिन गुरुवार को गुजरात से भाजपा के लिये राहत की खबर आई तो हिमाचल प्रदेश भाजपा के हाथ से निकल गया। हिमाचल को कांग्रेस ने अपने पंजे में ले लिया। भाजपा के यहां रिवाज बदलने के दावे धरे के धरे ही रह गये और कांग्रेस के हाथ ने कमल से सत्ता छीन ली। इतना ही नहीं यूपी समेत पांच राज्यों में विधानसभा की छह व लोकसभा की एक सीट का परिणाम भी केसरिया खेमे के मुफीद नहीं आया। मैनपुरी में जहां सपा की डिंपल यादव ने बड़ी जीत दर्ज की।

वहीं, खतौली विधानसभा सीट को रालोद ने भाजपा को बड़े अन्तर से हराकर छीन ली। इसके अलावा ओड़िशा बीजद और राजस्थान व छत्तीसगढ़ में भाजपा को कांग्रेस के हाथों मात मिली है। ऐसे में भाजपा एमसीडी, हिमाचल प्रदेश व उपचुनाव के नतीजों से पूरी तरह बौखला गई है। पार्टी के नेता परिणामों से बेहद परेशान हैं और अंदर ही अंदर हार पर समीक्षा करने के साथ ही संगठन ने हार से सबक लेते हुए नये सिरे से 2024 के लिए रणनीति पर मंथन और चिंतन शुरू कर दिया है।

सुब्रत राय सहारा को गिरफ्तार करने पहुंची 12 थानों की फोर्स

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सहारा परिवार के मुखिया सुब्रत राय सहारा की मुश्किलें एक बार फिर बढ़ गई हैं। प्रदेश की राजधानी लखनऊ के गोमतीनगर इलाके में स्थित सहारा शहर के आसपास पुलिस के जमावड़े ने माहौल में गर्मी बढ़ा दी है।

पुलिस सूत्रों के मुताबिक 12 थानों की फोर्स सहारा प्रमुख सुब्रत राय को गिरफ्तार करने के लिए उनके घर पहुंची है। यही वजह है कि सहारा शहर का गेट पुलिस छावनी जैसा नजर आ रहा है। इससे पहले जानकारी मिली थी कि किसी मामले में लखनऊ पुलिस सहारा शहर में दबिश देने पहुंची है। मामले में राय की गिरफ्तारी हुई है या नहीं, अभी साफ नहीं हो पाया है। जानकारी के मुताबिक, पुलिस किसी पुराने मामले में आए वारंट पर गिरफ्तारी के लिए पहुंची है।

खतौली में भूपेंद्र नहीं रख पाए भाजपा की 'चौधराहट' बरकरार

उपचुनाव में तमाम प्रयासों के बावजूद सीट नहीं बचा पाया सत्तारूढ़ दल

प्रदेश की कमान मिलने के बाद पश्चिम में सजातियों को रिझाने की कोशिशें रहीं नाकाम

परवेज़ त्यागी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी के चौधरी अपनी पहली परीक्षा में ही फेल हो गए। पश्चिमी यूपी में जिस समीकरण को साधने के लिए उनको संगठन के मुखिया की कमान सौंपी गई थी, उसको पूरा करने में वह पूरी तरह विफल साबित हुए हैं। मुजफ्फरनगर की खतौली विधानसभा सीट के उपचुनाव का परिणाम इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। उपचुनाव में तमाम हथकंड़े अपनाने के बाद भी यहां भाजपा की चौधराहट बरकरार नहीं रह पायी है।

गौरतलब है कि, मुरादाबाद के मूल निवासी भूपेंद्र चौधरी को भाजपा ने किसान आंदोलन के बाद पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जाट मतदाताओं के बीच पार्टी को हुए नुकसान की भरपाई के लिए प्रदेश में संगठन की कमान सौंपी थी। हाल ही सम्पन्न उपचुनाव भूपेंद्र चौधरी की पहली परीक्षा थी, मगर वह अपनी पहली परीक्षा में पूरी तरह फेल हो गए। उनके नेतृत्व में पश्चिमी यूपी की खतौली विधानसभा सीट पर पिछले दो चुनावों से काबिज भाजपा को उपचुनाव में बुरी हार का मुंह देखना पड़ा है। यहां 22 हजार से अधिक वोटों के अंतर से जयंत चौधरी की रालोद विजयी हुई है। रालोद के मदन भैया ने भाजपा से दो बार के विधायक रहें विक्रम सैनी की धर्मपत्नी राजकुमारी को हराया है।

बीते गुरुवार को हुई मतगणना के आंकड़े इस सीट पर यह गवाही दे रहे हैं कि भूपेंद्र चौधरी की बिरादरी के मतदाताओं ने खूब नल से पानी सींचा है। जाट बिरादरी के बाहुल्य गांव और शहरी क्षेत्र में भी नल ने कमल पर बड़ी बढ़त बनाई है। जबकि दस माह पूर्व हुए चुनाव में भाजपा को इसी बिरादरी के करीब 50 से 55 फीसदी मतदाताओं ने वोट दिया था, जो इस बार बड़ी संख्या में भाजपा से छिटककर रालोद की झोली में चला गया। वहीं, भूपेंद्र चौधरी से लेकर भाजपा के तमाम बड़े जाट नेता अपने सजातीय मतों को रिझाने में पूरी तरह नाकाम रहे। खतौली में भाजपा की करारी हार की यह भी एक बड़ी वजह रही है। उधर, मुस्लिमों की भाजपा के खिलाफ एकमुश्त वोटिंग और रालोद की गुर्जर और दलित मतदाताओं में सेंधमारी ने सत्ताधारी दल की खतौली में छह साल से चली आ रही चौधराहट को समाप्त करते हुए उसे चारों खाने चित कर दिया।

नगर निगम : इतिहास में पहली बार अनारक्षित हुई गोरखपुर सीट

» 1994 से लगातार आरक्षित श्रेणी में थी यह सीट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गोरखपुर। प्रदेश में निकाय चुनाव की अधिसूचना कभी भी जारी हो सकती है। सभी सीटों पर आरक्षण के जारी होने के बाद अब निकाय चुनाव को लेकर सरगर्मी काफी तेज हो गई है। ऐसे में अब जीन सीटों पर आरक्षण बदला है, उन पर नए उम्मीदवार और नए समीकरण बनने शुरू हो गए हैं। इसी क्रम में सीएम योगी आदित्यनाथ के गृह जनपद गोरखपुर की नगर निगम महापौर की कुर्सी पहली बार अनारक्षित घोषित हुई है। पिछले तीन बार से यह कुर्सी भाजपा के कब्जे में रही है। इससे यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की लोकप्रियता का असर गोरखपुर नगर निगम की इस सीट पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। पिछले तीन

चुनाव के परिणाम इस बात के प्रमाण रहे है।

भाजपा पिछले तीन बार से इस सीट पर अपना कब्जा जमाती रही है, मगर हर बार उसने अपना मेयर बदला है। भाजपा ने नगर निगम गोरखपुर के लिए अपने प्रत्याशियों को कभी दोहराया नहीं है। राजनीतिक विशेषज्ञ बताते हैं कि सीट अनारक्षित होने से अब सभी राजनीतिक दलों में दावेदारों की संख्या बढ़ने की उम्मीद है।

नगर निगम बनने के बाद से आरक्षित ही रही सीट

1994 में गोरखपुर नगर निगम बनने के बाद से लगातार यह सीट आरक्षित ही रही है। साल 1995 में ओबीसी कोटे से राजेंद्र शर्मा चुनकर आए थे। साल 2000 में ओबीसी महिला से आशा देवी चुनी गईं थी। वह ट्रांसजेंडर थीं और चुनाव जीतकर आईं थीं। साल 2006 में अन्य पिछड़ा वर्ग से डॉ. अंजू चौधरी विजयी हुई थीं। साल 2012 में सीट सामान्य महिला की होने की वजह से डॉ. सत्या पांडेय चुनाव जीती थीं। उसके बाद 2017 में ओबीसी वर्ग से सीताराम जयसवाल मेयर बने। मगर, इस बार इसे अनारक्षित होने का मौका मिला है। लिहाजा अब कोई भी इस कुर्सी के लिए मैदान में उतरकर दो-दो हाथ कर सकता है।

योगी के गढ़ में जुटी सपा

इस बार समाजवादी पार्टी भी इस सीट पर मजबूती से उतरने का मन बना रही है। सपा जिलाध्यक्ष अवधेश सिंह यादव क कहना है कि सीट अनारक्षित होना एक चुनावी प्रक्रिया है। अनारक्षित हिसाब से आवेदन देंगे और लोगों को चुनाव लड़ाएंगे। समाजवादी पार्टी हमेशा से यहां मजबूती से चुनाव लड़ी है, इस बार भी चुनाव लड़ेगी। लोगों को यह याद दिलाएगी कि आप कैसे नावों से अपने घरों से निकले हो। अगर इससे निजात पाना चाहते हो तो सपा पर भरोसा करो और जिताओ। उन्होंने कहा कि नगर में जितने विकास हुए हैं, सब समाजवादी पार्टी की देन हैं। सूरजकुंड का ओवरब्रिज हो, धर्मशाला का ओवरब्रिज हो या नकहा का ओवरब्रिज हो, सब सपा की देन है। तीन बार से मेयर भाजपा के रहे हैं, तो क्या हुआ।

केसीआर की पार्टी का नाम अब हुआ भारत राष्ट्र समिति

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव की पार्टी तेलंगाना राष्ट्र समिति को अब भारत राष्ट्र समिति के नाम से जाना जाएगा। भारतीय निर्वाचन आयोग से पार्टी का को स्वीकृति मिल गई है। अब से अधिकारिक तौर पर टीआरएस का नाम भारत राष्ट्र समिति हो गया है।

तेलंगाना राष्ट्र समिति का नाम बदलने का फैसला आम सभा की बैठक में लिया गया था। टीआरएस जनरल बॉडी ने एक प्रस्ताव पारित किया था। इसको लेकर एक पत्र चुनाव आयोग को भेजा गया था, जिसे अब चुनाव आयोग ने स्वीकार कर लिया है। पार्टी कार्यकर्ताओं ने इस फैसले पर जश्न मनाया है। बता दें कि इन दिनों राज्य के मुख्यमंत्री केसीआर और केंद्र की भारतीय जनता पार्टी के बीच काफी खींचतान चल रही है।

लोनी पाकिस्तान में है क्या?

» बाहरी के सवाल पर विधायक मदन भैया का जवाब

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुजफ्फरनगर। खतौली विधानसभा उपचुनाव में सपा-रालोद गठबंधन के प्रत्याशी मदन भैया ने शानदार जीत हासिल की। इस जीत के साथ ही रालोद ने यहां पर छह साल के अपने सूखे को भी खत्म कर दिया। इस जीत से रालोद के हौसले काफी बुलंद हैं। हालांकि, उनके चुनावी मैदान में उतरते ही विपक्ष द्वारा उन पर बाहरी होने का आरोप लगाया जाता रहा है। अब चुनाव में जीत हासिल करने के बाद मदन भैया ने खुद इस मसले पर अपनी चुप्पी तोड़ी है और बयान दिया है। इस विषय पर बोलते ही उनका बयान चर्चा का विषय बन गया है। बाहरी होने के सवाल पर मदन भैया ने तंज कसते हुए पूछा, 'क्या लोनी पाकिस्तान में है।'

दरअसल, मदन भैया लोनी गाजियाबाद से आते हैं। ऐसे में वो खतौली का विकास कैसे कर पाएंगे। इसी को लेकर विपक्ष द्वारा लगातार उन पर बाहरी होने का आरोप लगाया जाता रहा है। अपनी जीत के बाद

मदन भैया ने खतौली की जनता, सपा रालोद गठबंधन, किसान, कमेरा और अल्पसंख्यक को धन्यवाद कहा। उन्होंने कहा कि ये भाईचारे की जीत है। उन्होंने कहा कि हमने किसानों, गरीबों, मजदूरों की राजनीति की है। मुजफ्फरनगर और खतौली के विकास का दावा किया। विपक्ष ने लगातार उनके लोनी निवासी यानी बाहरी होने का मुद्दा उठाया। ऐसे में क्षेत्र का विकास प्रभावित होने की बात कही जा ही है। इस पर मदन भैया ने पलटवार करते हुए पूछा, लोनी पाकिस्तान में है क्या? उन्होंने कहा कि हम भाईचारा जोड़ने की कोशिश कर रहे है। लोनी, मेरठ, प्रयागराज, गोरखपुर सब प्रदेश का अभिन्न हिस्सा है। उन्होंने लोनी चुनाव हारने पर कहा कि खतौली का प्रशासन निष्पक्ष और वहां का नहीं।

टीएमसी का कांग्रेस पर तंज, खुद को बताया भाजपा का एकमात्र विकल्प

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। गुजरात विधानसभा में कांग्रेस का प्रदर्शन बेहद निरशाजनक रहा है। इससे कांग्रेस के सामने एक नई चुनौती पेश आ गई है। अब भाजपा विरोधी दलों ने भी कांग्रेस को घेरना शुरू कर दिया है। विधानसभा चुनाव के नतीजे घोषित होने के बाद अह कभी कांग्रेस की सहयोगी रही तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) ने कांग्रेस पर कटाक्ष किया और 2024 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की क्षमताओं पर सवाल खड़े किए।

टीएमसी का कहना है कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ही देश में भाजपा के खिलाफ एकमात्र चेहरा हैं। पार्टी प्रवक्ता कुणाल घोष ने कहा कि गुजरात चुनाव में हार के बाद कांग्रेस को खुद की आलोचना करने की आवश्यकता है। गुजरात में वह (कांग्रेस) लड़ाई में ही नहीं दिखी। जबकि कांग्रेस के पास

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के गृह राज्य में जीत दर्ज कर खुद को साबित करने का मौका था, लेकिन वह ऐसा करने में असफल रहे। कांग्रेस चुनाव में सम्मान भी नहीं बचा पाई।

टीएमसी प्रवक्ता ने कहा कि कांग्रेस 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा का मुकाबला करने में समक्ष नहीं है। उन्होंने कहा कि जो गुजरात की लड़ाई में हार गए, वह पार्टी लोकसभा चुनाव कैसे लड़ सकती है। टीएमसी ही देश में भाजपा का विकल्प बन सकती है और चुनाव नतीजों से एक बार फिर इसकी प्रासंगिकता साबित हो गई है। वहीं, टीएमसी सांसद सुखेंदु शेखर रॉय ने कहा कि कांग्रेस को गुजरात विधानसभा चुनाव के लिए एक मजबूत रणनीति बनानी चाहिए थी, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया और भारत जोड़ो यात्रा में ही व्यस्त रहे।

उधर, टीएमसी सांसद शत्रुघ्न सिन्हा ने गुजरात में प्रचंड जीत के लिए भाजपा को बधाई दी। बता दें, गुजरात विधानसभा चुनाव में भाजपा ने कुल 182 सीटों में से 156 पर जीत दर्ज की है, जबकि कांग्रेस 17 सीटों पर सिमट गई है। राज्य के इतिहास में पार्टी का यह सबसे बुरा प्रदर्शन है।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

मैनपुरी में शिवपाल चाहते थे भाजपा से टिकट : सुब्रत

» कन्नौज के भाजपा सांसद ने साधा चाचा-भतीजे के एक होने पर निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मैनपुरी लोकसभा के उपचुनाव में समाजवादी पार्टी की डिंपल यादव ने दो लाख से भी अधिक वोटों से ऐतिहासिक जीत हासिल की। इस सीट पर सपा ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी, जिसका उसे नतीजा भी सकारात्मक मिला। मैनपुरी फतह करने के लिए अखिलेश यादव ने अपने चाचा शिवपाल यादव के साथ सारे गिले-शिकवे भुलाकर हाथ मिलाया था और समाजवादी पार्टी प्रगतिशील समाजवादी पार्टी ने एकसाथ मिलकर चुनाव लड़ा था। चुनाव का परिणाम आते ही चाचा-भतीजे एक साथ हो गए और प्रगतिशील समाजवादी पार्टी का समाजवादी पार्टी में विलय हो गया। अब सब कुछ ठीक हो गया।

हालांकि, एक समय ऐसा था जब ये कयास लगाए जा रहे थे कि मैनपुरी चुनाव में शिवपाल यादव भाजपा के उम्मीदवार के रूप मे या भजपा के समर्थन से मैदान में उतर सकते हैं। अब जब ऐसा नहीं हुआ और मैनपुरी का परिणाम भी आ गया, तब भाजपा के सांसद सुब्रत पाठक का ने ये दावा किया है कि शिवपाल यादव भाजपा के टिकट से मैनपुरी का चुनाव लड़ना चाह रहे थे। भाजपा सांसद का ये बयान अब चर्चा में बना हुआ है।

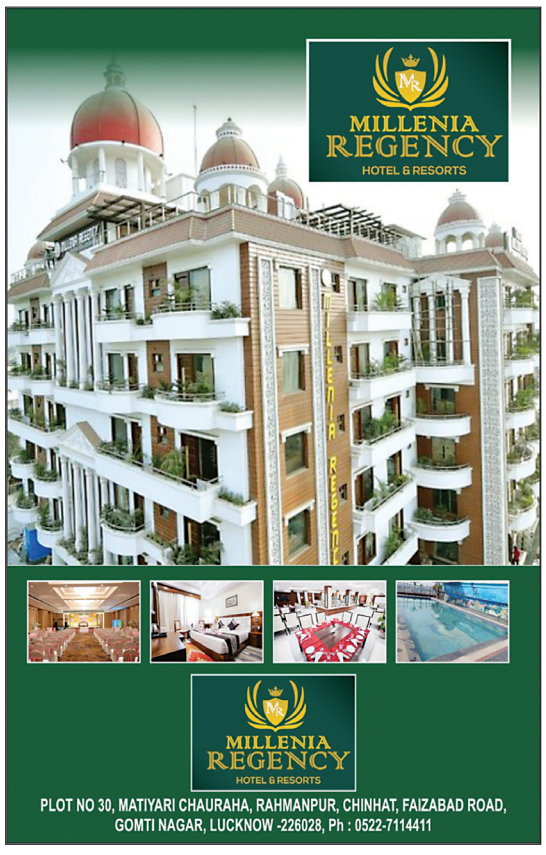

उत्तर प्रदेश में गठबंधन की नई सोशल इंजीनियरिंग ने बढ़ाई भाजपा की चिंता

» ओबीसी, दलित और मुस्लिमों का गठजोड़ उपचुनाव में पड़ा भारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश दो विधानसभा और एक लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव में समाजवादी पार्टी और रालोद ने शानदार प्रदर्शन किया। ये ही वजह रही कि नेताजी मुलायम सिंह यादव के निधन के बाद खाली हुई मैनपुरी लोकसभा सीट पर समाजवादी पार्टी ऐतिहासिक प्रदर्शन किया और सपा प्रमुख अखिलेश यादव की पत्नी डिंपल यादव ने रिकॉर्डतोड़ जीत हासिल की। इसके अलावा खतौली विधानसभा सीट पर भी सपा-रालोद गठबंधन ने शानदार प्रदर्शन करते हुए जीत हासिल की। हालांकि, आजम खान के गढ़ रामपुर में एक बार फिर भाजपा का 'कमल' खिला और सपा को लोकसभा के बाद विधानसभा से भी हाथ धोना पड़ा।

इस पर सपा को विचार जरूर करना पड़ेगा। मगर खतौली विधानसभा सीट पर सपा-रालोद गठबंधन की जीत से भाजपा और योगी सरकार को झटका जरूर लगा है। क्योंकि इस सीट पर पिछले छह साल से भाजपा का कब्जा था। इन उपचुनाव में समाजवादी पार्टी की जीत उसकी नई रणनीति और नई सोशल इंजीनरिंग की वजह से मिली है। उपचुनाव में सपा प्रमुख अखिलेश यादव और आरएलडी अध्यक्ष जयंत चौधरी की दलित नेता चंद्रशेखर आजाद के साथ हुई दोस्ती ने सपा के लिए ये नई सोशल इंजीनरिंग तैयार की गई। जिसमें बैकवर्ड, दलित और मुस्लिम का फॉर्मूला बना और जो सपा गठबंधन के लिए फायदेमंद साबित हुआ। इससे पहले विधानसभा चुनाव में भी इन तीनों के साथ आने की सम्भावना थी, लेकिन चंद्रशेखर से अखिलेश की बात नहीं बन सकी और ये सम्भव नहीं हो सका। हालांकि, उपचुनाव में ये तीनों साथ आए और एक नई सोशल इंजीनियरिंग बनी, जो सपा के लिए संजीवनी साबित हुई और भाजपा को अपने चक्रव्यूह में फंसाने में भी। अब यूपी के नगर निकाय और लोकसभा चुनाव 2024 के चुनाव में भी सपा इस सोशल इंजीनियरिंग को कायम रखना चाहेगी।

रामपुर में पहली बार कमल

रामपुर विधानसभा सीट सपा की मजबूत सीट मानी जाती है। सपा ने आजम खान की सीट से आसिम राजा को उतारा, तो बीजेपी से आकाश सक्सेना को। बीजेपी आजम के तमाम करीबी मुस्लिम नेताओं को अपने साथ मिलाया। रामपुर लोकसभा सीट को बीजेपी पहले ही अपने नाम कर चुकी है और अब उसने विधानसभा सीट पर भी अपना कमल खिला दिया। आजम के तमाम सिपहसालारों के बीजेपी के खेम में खड़े हो जाने के चलते रामपुर सीट को बचाए रखना सपा को मुश्किल लग रहा था. आखिरी वक्त में सपा प्रमुख अखिलेश यादव और दलित नेता चंद्रशेखर आजाद ने रामपुर में पहुंचकर आजम खान को हौसला दिया और मुस्लिम वोटों के साथ-साथ दलित समुदाय को भी साधने की कवायद की। हालांकि, बीजेपी के दांव और सत्ता में रहना का उसे लाभ मिला और यहां सपा की कोई रणनीति काम नहीं आई।

अखिलेश-जयंत-चंद्रशेखर आजाद की नई तिगड़ी

अखिलेश-जयंत चौधरी के साथ चंद्रशेखर आजाद का उपचुनाव में साथ आना यूपी के नए बनते समीकरण की ओर इशारा कर रही है। अखिलेश-जयंत-चंद्रशेखर की तिकड़ी आगामी लोकसभा चुनाव में एक साथ मिलाकर उतरते हैं, तो यूपी में बीजेपी और बीएसपी दोनों के लिए राजनीतिक तौर पर कड़ी चुनौती हो सकती है। खासकर पश्चिमी यूपी में, जहां पर जाट, मुस्लिम, दलित वोटर निर्णायक भूमिका में हैं। आरएलडी का कोर वोटबैंक जाट माना जाता है, तो सपा का मुस्लिम। दलित वोटबैंक के लिए चंद्रशेखर ट्रंप कार्ड साबित हो सकते हैं। पश्चिम यूपी में जाट 20 फीसदी के करीब हैं, तो मुस्लिम 30 से 40 फीसदी के बीच हैं और दलित समुदाय भी 25 फीसदी के ऊपर है। इसके अलावा गुर्जर भले ही तीन फीसदी है, लेकिन पश्चिमी यूपी में 15 फीसदी के करीब हैं। इस तरह से पश्चिम यूपी में अगर जाट-मुस्लिम-दलित-गुर्जर का समीकरण बनता है तो बीजेपी के साथ-साथ बसपा के लिए भी चुनौती खड़ी हो जाएगी।

मैनपुरी में अखिलेश की मेहनत लाई रंग

ऐसा ही कुछ किया सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने अपनी पैतृक सीट मैनपुरी को बचाने के लिए। अखिलेश ने किसी तरह की कोई भी गुंजाइश नहीं छोड़ी। डिंपल को जीत दिलाने के लिए अखिलेश ने सारे गिले-शिकवे भूलकर चाचा शिवपाल को भी अपने साथ कर लिया और आज परिणाम सामने आने के बाद शिवपाल की प्रसपा ने आधिकारिक रूप से समाजवादी पार्टी के साथ विलय कर लिया। मैनपुरी सीट पर अखिलेश-शिवपाल न सिर्फ यादव और मुस्लिम वोटों को बल्कि ब्राह्मण, गैर-यादव ओबीसी और दलित समुदाय के वोटों को भी साधने के लिए कवायद करते नजर आए। उपचुनाव में कांग्रेस और बसपा ने अपने कैंडिडेट नहीं उतारे थे। ऐसे में दलित वोटों का बीजेपी के पक्ष में जाने की संभावना दिख रही थी, लेकिन अखिलेश ने दलित समुदाय से लेकर तमाम अलग-अलग जातियों को जोड़े रखने के लिए खुद मोर्चा संभाल रखा था। महिला वोटर्स को साधने के लिए डिंपल यादव खुद पसीना बहा रही थी।

खतौली में काम आया जयंत का नया फॉर्मूला

इस नई सोशल इंजीनियरिंग को बनाने में आरएलडी प्रमुख जयंत चौधरी की भूमिका अहम रही। जिसका असर खतौली विधानसभा में देखने को भी मिला। जयंत ने जाट-मुस्लिम तक अपनी पार्टी को सीमित रखने के बजाय पश्चिमी यूपी में सियासी समीकरण को देखते हुए खतौली सीट पर नया राजनीतिक प्रयोग किया। आरएलडी ने खतौली सीट पर सैनी समुदाय के कैंडिडेट उतारने के बजाय गुर्जर समुदाय के मजबूत नेता मदन भैया को उतारा और चंद्रशेखर आजाद के जरिए दलित समुदाय के वोटों का साधने का दांव चला। जयंत का यह प्रयोग खतौली सीट पर बीजेपी के लिए चिंता का सबब बना। सीएम योगी सहित बीजेपी की तमाम नेताओं ने खतौली सीट पर प्रचार किया, लेकिन पार्टी उम्मीदवार राजकुमार सैनी के लिए जीत नहीं दिला सके। बीजेपी के लिए यह सीट काफी महत्वपूर्ण थी. इस सीट पर जाट-गुर्जर-सैनी-मुस्लिम वोटर काफी बड़ी संख्या में है। इसी समीकरण को देखते हुए जयंत ने इस बार सैनी और मुस्लिम के बजाय गुर्जर समाज पर दांव खेला। उपचुनाव भले ही तीन सीटों के लिए हुए हों, लेकिन इसका असर भविष्य की सियासत पर भी पड़ना तय है।

हिमाचल में कांग्रेस के मुख्यमंत्री चेहरे पर सबकी नजर

» कौल सिंह की दावेदारी पर हार ने लगाया ग्रहण

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

हिमाचल। हिमाचल प्रदेश के ताजा रुझानों में कांग्रेस बहुमत का आंकड़ पार कर लिया है. हिमाचल प्रदेश स्पष्ट जनादेश की ओर बढ़ चुका है जिसमें कांग्रेस को 40 सीटें, बीजेपी को 25 सीटें मिली हैं। कांग्रेस की जीत के साथ-साथ कांग्रेस सीएम उम्मीदवारो की हलचल भी बढ़ गई है। हिमाचल में सीएम पद के कई दावेदार हैं, लेकिन इस रेस में सबसे आगे पार्टी की प्रदेश अध्यक्ष और पूर्व सीएम वीरभद्र सिंह की पत्नी प्रतिभा सिंह हैं। हिमाचल प्रदेश के नतीजों पर प्रतिभा सिंह की पहली प्रतिक्रिया सामने आई है। उन्होंने कहा कि जनता ने हमें जनादेश दिया है, डरने की जरूरत नहीं है। हम चंडीगढ़ या राज्य में कहीं भी हमारे विधायकों से मिल सकते हैं। जो जीते हैं वे हमारे साथ रहेंगे और हम सरकार बनाएंगे।

हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस को बहुमत तो मिला है पर मुख्यमंत्री तय करना पार्टी नेतृत्व के लिए आसान नहीं रहने वाला है। सब कुछ निर्भर करेगा कि कांग्रेस कितनी मजबूत स्थिति में होती है और नए विधायकों में किस गुट के कितने हैं। सीएम पद की रेस में आधा दर्जन से ज्यादा नाम हैं। पांच बड़े दावेदार हैं और दो ऐसे नाम हैं जिन्हें छुपा रुस्तम माना जा रहा है। आपको बता दें कि चुनाव आयोग के आंकड़े के मुताबिक, कांग्रेस इस चुनाव में 40 सीटें जीत सकती है। वहीं, भारतीय जनता पार्टी 25 सीटों पर ही सिमट गई। तीन सीटों पर निर्दलीय उम्मीदवारों का दबदबा है। इस बार हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस सरकार बनाएगी। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर कांग्रेस की तरफ से मुख्यमंत्री कौन बनेगा? दरंग सीट से आठ बार विधायक रहे कौल सिंह भी मुख्यमंत्री पद की दौड़ में थे। उन्हें भाजपा के पूरन चंद ने 1,033 वोट से हरा दिया। इस हार के चलते मुख्यमंत्री पद पर उनकी दावेदारी को ग्रहण लग गया है। वहीं इन नामों की चर्चा सबसे ज्यादा हैं।

प्रतिभा सिंह

मुकेश अग्निहोत्री

विक्रमादित्य सिंह

सुखविंदर सिंह

धनीराम नरेनूराम सांडील

चौहान-धर्माणी हो सकते हैं छुपे रुस्तम

बड़े नामों के अलावा दो ऐसे नाम हैं जिन्हें हिमाचल कांग्रेस के अंदरखाने में छुपा रुस्तम माना जा रहा है। पहले हैं हर्षवर्धन चौहान जो सिरमौर जिले की शिलाई सीट से पांच बार के विधायक हैं। इनके पिता हिमाचल सरकार में मंत्री रह चुके हैं। दूसरा नाम है राजेश धर्माणी का जो कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव हैं और राहुल गांधी की टीम के करीबी हैं। धर्माणी बिलासपुर की घुमारवीं सीट से दो बार विधायक रह चुके हैं हालांकि पिछला चुनाव हार गए थे।

प्रतिभा सिंह

कांग्रेस की तरफ से मुख्यमंत्री की दौड़ में सबसे आगे प्रदेश अध्यक्ष प्रतिभा सिंह का नाम है। ये चुनाव भी कांग्रेस ने प्रतिभा सिंह का नाम आगे रखकर ही लड़ा है। प्रतिभा पूर्व मुख्यमंत्री दिवंगत वीरभद्र सिंह की पत्नी हैं। कांग्रेस भी वीरभद्र के विकास मॉडल को ही आगे बढ़ाने की बात करती रही है, ऐसे में वीरभद्र सिंह की पत्नी प्रतिभा सिंह को मुख्यमंत्री की दौड़ में सबसे आगे माना जा रहा है। अभी प्रतिभा मंडी लोकसभा सीट से सांसद हैं। ऐसे में अगर वह मुख्यमंत्री बनती हैं तो उन्हें छह महीने के अंदर किसी सीट से विधानसभा चुनाव जीतना होगा।

मुकेश अग्निहोत्री

हरोली विधानसभा सीट से चुनाव लड़े मुकेश अग्निहोत्री भी मुख्यमंत्री पद की दौड़ में आगे हैं। पिछले पांच साल मुकेश ने हिमाचल प्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष की भूमिका निभाई है। मुकेश लगातार चार बार विधायक चुने जा चुके हैं।

विक्रमादित्य सिंह

अगर प्रतिभा सिंह सीएम नहीं बनती हैं तो उनके बेटे विक्रमादित्य सिंह को सीएम बनाया जा सकता है। विक्रमादित्य युवा हैं और ऐसा करके पार्टी युवाओं को आगे बढ़ाने का नया संदेश दे सकती है। इसके साथ-साथ वीरभद्र परिवार के हाथ में ही हिमाचल की सत्ता भी बरकरार रह पाएगी। विक्रमादित्य ने युवाओं को जोड़ने के लिए चुनाव से पहले पूरे राज्य में रोजगार संघर्ष यात्रा निकाली। चुनाव प्रचार के प्रमुख चेहरों में शामिल रहे।

सुखविंदर सिंह

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष सुखविंदर सिंह का नाम भी मुख्यमंत्री की दौड़ में आगे है। सुखविंदर पार्टी की चुनाव प्रचार समिति के अध्यक्ष हैं। मतलब सूबे में पार्टी के प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी सुखविंदर के पास ही थी। सुखविंदर को सीएम बनाकर कांग्रेस पंजाब पर भी निशाना लगा सकती है। इस बार पंजाब में कांग्रेस को बुरी हार मिली है। सुखविंदर का कनेक्शन पंजाब से है। ऐसे में उन्हें हिमाचल प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाकर सिखों के बीच कांग्रेस नए सिरे से पैठ बनाने की कोशिश कर सकती है।

धनीराम नरेनूराम सांडील

कांग्रेस के दिग्गज नेता धनीराम नरेनूराम सांडील का नाम भी सीएम की रेस में है। धनीराम कोली जाति के वोटर्स के बीच अच्छी पैठ रखते हैं। वह दो बार लोकसभा के सांसद भी चुने जा चुके हैं। इस बार धनीराम सोलन से चुनाव लड़ रहे हैं।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

आम आदमी को तबाह करती महंगाई

पछले कुछ वर्षों में निरंतर जिस तेजी के साथ देश में महंगाई बढ़ी है, उससे गरीब तबका तो पहले से ही परेशान है, लेकिन अब तो मध्यमवर्गीय परिवार को भी अपनी आय और व्यय में सामंजस्य बैठाना बेहद मुश्किल हो रहा है। कोरोना काल के बाद देश में आर्थिक मंदी व सभी क्षेत्रों में बढ़ती महंगाई ने आम जनता के सामने 'वह जीवनयापन कैसे करें' कि एक बहुत बड़ी चुनौती खड़ी कर दी है।

आसमान छूती महंगाई ने आम लोगों के घर का बजट ही बिगाड़ दिया है। कीमतों में हो रही लगातार बढ़ोतरी ने लोगों का जीना मुहाल कर दिया है। स्थिति ये है कि आधा महीना पार करना भी मुश्किल हो जाता है। सब्जियां, दाल, अनाज, तेल, पेट्रोल-डीजल, गैस-सिलेंडर, वाहन, सीमेंट सहित लगभग हर क्षेत्र में महंगाई ने पांव पसार दिए हैं। महंगाई से परेशान जनता अब किलो में सामान खरीदने के बजाए पाव से काम चला रही है। महंगाई की सबसे ज्यादा मार आम आदमी की थाली पर पड़ी है, लेकिन हैरत की बात है कि केंद्र सरकार महंगाई में राहत देने की बजाए खाने-पीने की चीजों पर जीएसटी लगाकर रही सही कसर भी निकाल रही है। 100-120 रुपये लीटर में बिकने वाला सरसों तेल अब 180-220 रुपये लीटर पहुंच गया है। इसी तरह रिफाइंड तेल अब 180-200 रुपये लीटर पहुंच गया है। इसके अलावा दालों और सब्जियों के दाम भी कई फीसद बढ़ चुके हैं। बीते एक महीने में रिटेल बाजार में गेहूं व दाल के भाव 5 प्रतिशत और 4 प्रतिशत तक बढ़ गए हैं। पाम ऑयल को छोड़कर सभी प्रमुख खाद्य तेलों की कीमतों में भी इस दौरान वृद्धि हुई है।

ऐसे में आम जनता के लिए जिंदगी का गुजारा करना काफी मुश्किल होता जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों में निरंतर जिस तेजी के साथ देश में महंगाई बढ़ी है, उससे गरीब तबका तो पहले से ही परेशान है, लेकिन अब तो मध्यमवर्गीय परिवार को भी अपनी आय और व्यय में सामंजस्य बैठाना बेहद मुश्किल हो रहा है। कोरोना काल के बाद देश में आर्थिक मंदी व सभी क्षेत्रों में बढ़ती महंगाई ने आम जनता के सामने 'वह जीवनयापन कैसे करें' कि एक बहुत बड़ी चुनौती खड़ी कर दी है। हालातों में सुधार होने की जगह परिस्थितियां दिन-प्रतिदिन विकट होती जा रही हैं।

भारत में महंगाई बढ़ने के दो मुख्य कारण हैं। खाने के तेल की कीमतों में भारी बढ़ोत्तरी और साथ ही ईंधन की कीमतों में बढ़ोत्तरी। दालों की कीमतों के बढ़ने से भी इंडियन फूड बास्केट तेजी से बढ़ा है। केंद्र सरकार ने इन दोनों के ही दामों में कमी लाने के लिए कदम उठाए हैं। पेट्रोल-डीजल पर एक्साइज ड्यूटी घटाने के साथ कच्चे सूरजमुखी तेल के ड्यूटी फ्री इंपोर्ट की अनुमति दी है। सरकार के इन कदमों से महंगाई से कुछ हद तक राहत मिली है, लेकिन यह पूरी तरह से कम नहीं हो पाई है। मैन्युफैक्चरिंग और सप्लाई चेन में दिक्कत महंगाई को बढ़ा रहे हैं। कोरोना महामारी के लॉकडाउन में मैन्युफैक्चरिंग और सप्लाई चेन दोनों प्रभावित हुई थी। इससे माल कम हो गया है और इसलिए उन सामानों की कीमतों में इजाफा हुआ है जो बाजारों तक कम पहुंच रहे हैं।

संजय

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

भाजपा पर भारी केजरीवाल की सियासी पारी

उमेश चतुर्वेदी

दिल्ली नगर निगम पर अरविंद केजरीवाल का कब्जा हो गया। यदि 2017 के नगर निगम चुनाव की तुलना में देखें, तो भाजपा की हार बड़ी है, लेकिन 2020 के विधानसभा नतीजों के हिसाब से देखें, तो आम आदमी पार्टी की जीत भी बड़ी नहीं है। साल 2013 में केजरीवाल के उभार के बाद लोकसभा के दो चुनाव हुए हैं, जिनमें भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व के साथ-साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी ताकत झोंकी। लेकिन विधानसभा चुनाव में दिल्ली भाजपा ने वैसा उत्साह नहीं दिखाया, जिनसे कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन की उम्मीद रहती है, वे रणनीति के मसले पर पल्ला झाड़ते दिखे, जबकि अमित शाह ने खुद मोर्चा संभाल रखा था। इसका असर इतना ही हुआ कि 2015 की 67 सीटों के मुकाबले आम आदमी पार्टी की पांच सीटें कम हुईं।

दरअसल दिल्ली में भाजपा को संभालने वाले जो लोग हैं, उनके मानस की बुनावट अब भी दिल्ली की पुरानी जनसांख्यिकी पर केंद्रित है। यहां अस्सी के दशक तक पंजाबी, बनिया और शरणार्थी समुदाय की जनसंख्या में प्रभावी उपस्थिति थी। तब देहात के जाट और गुजर समुदाय में भाजपा का असर कम था। तब दिल्ली भाजपा पर पंजाबी, बनिया और शरणार्थी समुदाय के नेताओं का बोलबाला था। अब स्थिति बदल चुकी है। पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार और उत्तराखंड मूल के लोगों की संख्या बढ़ी है। अपने मूल राज्यों में ये लोग या उनके परिजन ज्यादातर भाजपा के समर्थक हैं। पर यही लोग दिल्ली में केजरीवाल के साथ नजर आते हैं। इसकी मोटी वजह यह है कि पुरानी जनसांख्यिकी से प्रभावित दिल्ली भाजपा का नेतृत्व नयी जनसांख्यिकी के मुताबिक राजनीति करने और कार्यकर्ता बनाने का मानस नहीं बना पाया है। इसके अनुसार नेता उभारने की हिचक भी नेतृत्व में दिखती है। यह ठीक है कि दिल्ली भाजपा का अध्यक्ष बिहार मूल के मनोज तिवारी को बनाया गया, लेकिन जमीनी स्तर पर उनकी सहज स्वीकार्यता भाजपा में नहीं बनी। आदेश गुप्ता भले ही वणिक समुदाय से हैं, लेकिन उनकी पृष्ठभूमि उत्तर प्रदेश के कन्नौज से जुड़ी है। कह नहीं सकते कि भाजपा के भीतर उन्हें कितना स्वीकार किया गया है।

केजरीवाल ने शुरू से अपनी राजनीति में नयी जनसांख्यिकी आधारित वैचारिकता को बढ़ावा देने की कोशिश की है। उन्होंने हर बार उत्तराखंड, बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश मूल के कार्यकर्ताओं पर ज्यादा भरोसा जताया है। उनका भी स्वभाव केंद्रीयकृत व्यवस्था को बढ़ावा देने वाला है, पर यह भी सच है कि आम आदमी पार्टी ने दिल्ली के प्रवासी

समुदायों को मिलाकर ऐसा सियासी कोलाज बनाया है, जिसकी धमक अब नगर निगम के नतीजों में भी दिखी है।

पार्टी ने अपने कार्यकर्ताओं में यह संदेश देने की कोशिश की है कि वह सत्ता में हर समुदाय के लोगों को भागीदारी देने वाली है। इसका असर यह है कि भाजपा की तमाम रणनीतियों पर केजरीवाल का कोलाज हावी हुआ है। केजरीवाल का दावा था कि भाजपा को बीस से ज्यादा सीटें नहीं आयेंगी। पर भाजपा पांच गुना से ज्यादा सीटें जीती है। दक्षिण दिल्ली के मेयर रहे भाजपा उम्मीदवार को लेकर स्थानीय स्तर पर भाजपा कार्यकर्ता नारा लगाते नहीं थके थे कि मोदी तुझसे बैर नहीं, स्थानीय उम्मीदवार की खैर नहीं। भाजपा के ज्यादातर उम्मीदवार अपनी अकर्मण्यता और भ्रष्टाचार के कारण हारे हैं। अगर भाजपा ने अरविंद केजरीवाल की तरह आज की जनसांख्यिकी के हिसाब से सियासी कोलाज बनाया होता, तो उसकी हार शायद नहीं होती। दिल्ली नगर निगम के नतीजों ने केजरीवाल को भी संकेत दिये हैं। जेल में बंद उनके मंत्री सत्येंद्र जैन और उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के विधानसभा क्षेत्रों में पार्टी को एक भी वार्ड पर जीत नहीं मिली है। एक अन्य मंत्री गोपाल राय की सीट के अधीन चार वार्डों में से दो पर भाजपा, एक पर कांग्रेस और एक पर आम आदमी पार्टी जीती है। साफ है कि इन नतीजों ने आम आदमी पार्टी को भी चेतावनी दी है। केंद्र शासित प्रदेश होने के बावजूद यहां के नगर निगम को केंद्र से मिलने वाला कोष भी दिल्ली सरकार के जरिये आता है। जानकार जानते हैं कि केजरीवाल सरकार ने उसे नगर निगम को कभी सही वक्त पर नहीं दी। इसके चलते निगम में अराजकता रही। इसका भी खामियाजा भाजपा को भुगतना पड़ा है।

लेकिन अब केजरीवाल ऐसा बहाना नहीं कर पायेंगे। उन्होंने कूड़े के पहाड़ों को हटाने का मुद्दा बनाया। उन्हें इन पहाड़ों को हटाना होगा। बसों के बेड़े को भी सुधारना होगा। उनके पार्षदों के लिए भ्रष्टाचार करना आसान नहीं होगा क्योंकि दिल्ली पुलिस समेत केंद्रीय एजेंसियों की निगाह उन पर रहेगी। नगर निगम में मजबूत विपक्ष बनकर उभरी भाजपा को विपक्षी राजनीति बखूबी करनी आती है, लिहाजा वह मौका नहीं छोड़ेगी।

डरें नहीं, अच्छा है आइटी सेक्टर का भविष्य

हरप्रीत सिंह सलूजा

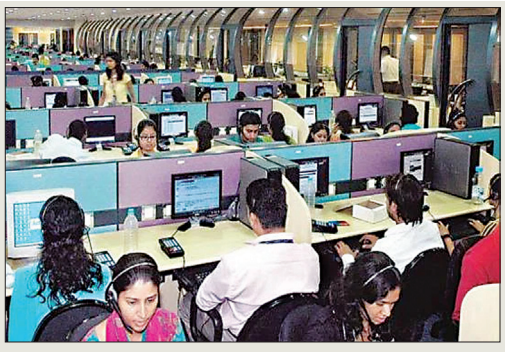

हाल के दिनों में बड़ी वैश्विक तकनीकी कंपनियों में व्यापक पैमाने पर हो रही छंटनी से चिंता पैदा होना स्वाभाविक है। हमें इस स्थिति की पृष्ठभूमि को देखना चाहिए। हम अभी जो होता हुआ देख रहे हैं, कमोबेश यही हालत कोविड महामारी से पहले के दौर में थी। जब महामारी ने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया, तब अन्य क्षेत्रों की तरह तकनीकी क्षेत्र में भी मांग व आपूर्ति का अनुपात घटा और यह लगभग 20 प्रतिशत के स्तर पर आ गया। जब महामारी की रोकथाम से संबंधित पाबंदियों में ढील देने का सिलसिला शुरू हुआ तथा आर्थिक व कारोबारी गतिविधियों में तेजी आने लगी, तो 2021 के अंतिम कुछ महीनों तथा इस साल के शुरू में मांग में भी बढ़ोतरी आयी। इसी के साथ मांग का हिसाब 80-90 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच गया।

इसकी एक बड़ी वजह यह थी कि यूरोप और अमेरिका समेत कई देशों में अपनी अर्थव्यवस्था और व्यापार प्रक्रिया के डिजिटलीकरण की होड़ लग गयी ताकि भविष्य में ऐसी किसी महामारी की स्थिति में कारोबार पर असर न हो या कम हो। इसे ऐसे समझने की जरूरत है कि मांग को जो स्तर महामारी से पहले 50 प्रतिशत था, वह कोरोना काल में 20 प्रतिशत हुआ और फिर उसमें बड़ी उछाल आयी तथा वह लगभग 90 फीसदी के आसपास जा पहुंचा। आज हम फिर से मांग को 50 प्रतिशत के आसपास आता हुआ देख रहे हैं। भारतीय टेक कंपनियों में जो छंटनी या भर्ती प्रक्रिया धीमी होने की स्थिति हम आज देख रहे हैं, उसका कारण भविष्य के आकलन का गलत साबित होना है। कंपनियों को ऐसा लगा कि कोरोना काल के तुरंत बाद जो मांग में तेज वृद्धि हुई है, वह लंबे समय तक बरकरार रहेगी। ऐसे में नये कर्मियों की भर्ती भी तेज हुई और बड़ी कंपनियों ने अपने यहां कार्यरत लोगों को रोकने के लिए उनके वेतन-भत्ते में मुंहमांगी बढ़ोतरी भी की।

आकलनों के अनुसार टेक बाजार में कई साल तक बढ़त होनी थी। ऐसे में कंपनियों ने कॉलेजों से नयी प्रतिभाओं को भी बड़ी संख्या में नौकरियां दीं ताकि वे दौड़ में बने रहें और उनके पास लोगों की कमी न रहे। इस मामले में यह भी हुआ कि बहुत से छात्रों ने कंपनियों से ऑफर लेटर तो हासिल किया, लेकिन नौकरी ज्वाइन करने की तारीख नहीं ली। उसके बाद रूस और यूक्रेन के युद्ध का असर अमेरिका और यूरोप की अर्थव्यवस्था पर जब पड़ना शुरू हुआ, तो अमेरिकी टेक कंपनियों, जैसे- गूगल, आमेजन, फेसबुक-मेटा आदि, को छंटनी करने पर मजबूर होना पड़ा। उसका असर अन्य देशों में उनके कारोबार और कार्यालयों पर भी हुआ। अपने देश की कुछ कंपनियों में छंटनी हो रही है, वह इसलिए है कि बढ़त और अनुमान को देखकर उन्होंने अंधाधुंध भर्तियां की तथा अब जब मांग में एक स्थिरता आ रही है, तो उन्हें लोगों को हटाना पड़ रहा है। लेकिन भारत में तकनीकी क्षेत्र में अभी ऐसी स्थिति कतई नहीं आयी है कि लोगों को नौकरियां नहीं मिलेंगी। अभी भी भर्ती हो रही है, मांग कम होने से उनकी रफ्तार कम है तथा पहले जिस तरह से वेतन आदि तय हो रहे थे, वैसा नहीं हो रहा है।

मुझे ऐसा लगता है कि रूस-यूक्रेन युद्ध और अन्य वैश्विक आर्थिक कारणों का असर कुछ समय तक रहेगा। हाल में आइटी सेक्टर की कंपनियों ने जो अपनी तिमाही या छमाही कारोबारी रिपोर्ट दी है, उसमें उन्होंने बताया है कि उनके पास भविष्य के लिए ठोस रणनीति है। ऐसे में हमें कारोबार कम होता हुआ नहीं दिख रहा है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि कुछ महीनों बाद स्थिति सामान्य हो जायेगी। कई और देशों में अनिश्चितता की स्थिति है। उन कंपनियों में अच्छी संख्या में भारतीय या भारतीय मूल के लोग कार्यरत है। वे कामकाजी वीजा पर वहां गये हैं। नियमों के अनुसार, अगर इन्हें छह माह के भीतर नौकरी नहीं मिलती है, तो उन्हें वापस आना पड़ेगा। यह चिंता की बात है, पर हम इसके लिए किसी को जिम्मेदार नहीं ठहरा सकते है। अगर अमेरिका और कुछ यूरोपीय देशों की सरकारें इस संबंध में सहानुभूति के साथ व्यवहार करती हैं, तो वह स्वागतयोग्य होगा। जो छात्र हमारे देश में आइटी शिक्षा ले रहे हैं, उन्हें यह समझना होगा कि भारत में हजारों कंपनियां हैं।

बड़ी कंपनियों में नौकरी की इच्छा करना अच्छी बात है, लेकिन बहुत सारी छोटी कंपनियों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। बहुत छात्र सोचते हैं कि अगर वे बड़े ब्रांड के साथ करियर शुरू करेंगे, तो उन्हें आगे फायदा होगा। हकीकत में ऐसा नहीं होता। अगर वे छोटी कंपनियों में कुछ समय काम कर बड़ी कंपनियों का दरवाजा खटखटायेंगे, तो उन्हें ज्यादा तरक्की मिलेगी। हमारे पास हाल ही में यह शिकायत आयी कि सैकड़ों छात्र कई महीनों से ज्वाइनिंग लेटर का इंतजार कर रहे हैं। प्लेसमेंट के मामले में ऐसा भी हुआ है कि कुछ छात्र चयन के साल भर बाद भी कंपनी से पत्र आने की राह देख रहे हैं। ऐसे में हमारे छात्रों को एक कंपनी का आसरा देखते रहने की जगह अन्य विकल्पों पर विचार करना चाहिए। नये छात्रों के लिए हमारे आइटी सेक्टर में नौकरियों की कमी आज भी नहीं है। बाद में जब स्थिति बेहतर होगी, तो उनके अनुभव उन्हें और अच्छे अवसर हासिल करने में मददगार होंगे। सरकार की ओर से स्टार्टअप कंपनियों को बहुत सी सहूलियत दी जा रही है। हमारे छात्र उनके साथ भी अपना करियर शुरू कर सकते हैं। तमाम कठिनाइयों के बावजूद यह कहा जा सकता है कि आइटी कंपनियों और स्टार्टअप के लिए स्वर्णिम समय आने वाला है। अगर आप किसी कंपनी का हिसाब-किताब देखें, तो वह एक या दो दशक में कभी घाटे में नहीं गयी है। उनकी लगातार वृद्धि हुई है। तकनीक की जरूरत हर क्षेत्र में बढ़ती जा रही है। ऐसे में नौकरी या करियर के लिहाज से भी यह सेक्टर किसी को निराश नहीं कर सकता है। हमें भविष्य को लेकर आश्वस्त रहना चाहिए।

हल्दी, संतरा और वनिला स्मूदी

संतरा विटामिन-सी का भंडार है, जो सर्दी के मौसम में आपको बीमार होने से बचाने का काम करता है। इसलिए इस मौसम संतरे का जूस ज़रूर पिएं। आप इसे और मज़ेदार बनाने के लिए इसमें वनिला योगर्ट, फ्रोज़न केले, दालचीनी और चुटकी भर हल्दी मिला सकते हैं। मीठे स्वाद के लिए चीनी की जगह शहद को शामिल कर सकते हैं।

हल्दी और अजवाइन का पानी

यह पानी अगर आप रोजाना पीते हैं, तो इससे आपका पाचन दुरुस्त होगा, मेटाबॉलिज़्म को बढ़ावा मिलेगा और साथ ही वजन भी कम होगा। इस ड्रिंक को बनाना भी बेहद आसान है। इसके लिए अजवाइन को पानी में भिगोकर रात भर के लिए छोड़ दें। अगले दिन, इस पानी में हल्दी डालकर उबाल लें। इसे छानें और फिर पी लें।

हल्दी दूध

अगर आपको दूध पसंद है, तो सर्दी में हल्दी दूध का मजा ले सकते हैं। यह ड्रिंक न सिर्फ स्वाद में मजेदार होती है, बल्कि सेहत को भी फायदा पहुंचाती है। इसके लिए आप नारियल के दूध का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। हल्दी के अलावा आप इसमें जायफल, शहद और दालचीनी भी मिला सकते हैं। इससे न सिर्फ ड्रिंक मज़ेदार बनेगा बल्कि आपकी इम्यूनिटी भी बूस्ट होगी औरआप बीमार पड़ने से बचेंगे।

हल्दी मसाला दूध

भारत में दूध और हल्दी का सेवन सदियों से किया जा रहा है। इसके लिए एक पतीले में दूध, हल्दी, दालचीनी पाउडर और काली मिर्च को मिलाकर उबाल लें। इसमें आप स्वाद के लिए चीनी, शहद या फिर गुड़ भी मिला सकते हैं। इसे गुनगुना कर पिएं।

सर्दी में खुद को बीमारियों से बचने के लिए करें

हल्दी का सेवन

मौसम में ठंडक आने से आपको झुलसाने वाली गर्मी से राहत तो मिलती है, लेकिन साथ ही कई बीमारियां शिकार भी बना लेती हैं। सर्दी के मौसम में अक्सर लोग खांसी, जुकाम और फ्लू से जूझते हैं। यही वजह है कि भारतीय घरों में इस दौरान कई तरह के घरेलू उपाय अपनाए जाते हैं, ताकि शरीर को राहत मिलती रहे। इनमें हल्दी का उपयोग खूब होता है, क्योंकि यह जादुई औषधि एंटी-बैक्टीरियल से लेकर एंटी-फंगल भी है, जो आपको कई रोगों से बचाती है। यह एक प्राकृतिक एंटीऑक्सीडेंट है और इसमें सूजन-रोधी गुण भी होते हैं। हल्दी सामान्य सर्दी, साइनस, जोड़ों के दर्द और अपच को ठीक करने में मदद करती है। यह गले में खराश और बैक्टीरियल संक्रमण से भी राहत देती है, जो सर्दियों के दौरान आम है। तो आइए जानें कि हल्दी को किस-किस तरह से इस्तेमाल किया जा सकता है, ताकि आप इस मौसम सेहतमंद रह सकें।

संतरे और अदरक का डिटॉक्स ड्रिंक

संतरे का आप डिटॉक्स की तरह भी उपयोग कर सकते हैं। इसके लिए संतरे के जूस के साथ अदरक का रस भी मिलाएं, जिससे शरीर डिटॉक्स होगा। इसके लिए एक संतरा लें, हल्दी, पिसा हुआ अदरक, गाजर का जूस निकाल लें और फिर इसमें स्वाद के लिए नींबू का रस मिला लें।

हंसना मना है

मुझे भी देखने दो, किसका एक्सीडेंट हुआ है? टोलू भीड़ को हटाते हुए बोला। जब कोई हटा नहीं, तो वह चिल्लाता हुआ बोला-जिसका एक्सीडेंट हुआ है, मैं उसका पिता हूं। रास्ता मिल गया और टोलू ने देखा तो एक गधा मरा पड़ा था।

टीचर मौंटी स: कभी अपनी बुक खोल के देखी है तुमने? मौंटी: हां, मैं तो रोज बुक खोलता हूं। टीचर : कौन सी बुक? मौंटी: फेसबुक।

मास्टर जी: बताओ कौन सी ऐसी चीज है, जो खींचने से छोटी होती है? मिंकू: सर बीड़ी। मास्टर जी: नशेड़ी की औलाद, तू निकल मेरी क्लास से बाहर।

लड़की: कितना प्यार करते हो मुझसे? प्रेमी: शाहजहां जैसा, लड़की: तो ताजमहल बनवाओ, प्रेमी: जमीन खरीद ली है, बस तुम्हारे मरने का इंतज़ार कर रहा।

मौंटी: क्या हुआ क्यों उदास बैठे हो? मोहन: कल एक न्यूज चैनल के एंकर ने कहा था। आइए हम आपको गोवा लेकर चलते हैं। तभी से तैयार बैठा हूं, कोई आया ही नहीं।

टिंकू जब पहली बात जूते खरीदने गया-टिंकू: मैंने आज दुकानदार को उल्लू बनाया। मिंकू: कैसे? टिंकू: एक जूते की कीमत पर दो जूते खरीदे, कीमत एक ही पर लिखी थी। मिंकू: दूसरे जूते पर रेट लिखना भूल गया होगा।

शौंटी मोबइल कंपनी में इंटरव्यू देने गया पहले सवाल पर ही उसे भगा दिया गया। सवाल: सबसे मशहूर नेटवर्क कौन सा है? शौंटी: कार्टून नेटवर्क!

कहानी | बेचारी स्वीटी

एक छोटी बच्ची थी स्वीटी। यूँ तो देखने में एकदम गोल-मटोल थी, लेकिन वह हमेशा बीमार रहती थी। बीमार भी वह अचानक ही पड़ जाती थी। एक बार स्वीटी के हाथ में इतना ज्यादा दर्द हुआ कि उस पर पट्टी बाँधनी पड़ी। ऐसा अँगेजी के टैस्ट के ठीक पहले हुआ। उसकी अध्यापिका ने पूछा, दर्द बहुत ज्यादा है? बिलकुल भी नहीं लिख सकती? नहीं टीचर, बिलकुल नहीं, स्वीटी बोली। टीचर को उस पर तरस आ गया और बोली, कोई बात नहीं बेटी, मैं बाद में तुम्हारा टैस्ट ले लूँगी। कुछ दिन बाद स्वीटी गले पर पट्टी बाँधकर आई। टीचर ने उससे पूछा, गला दर्द कर रहा है क्या ? हाँ, बहुत ज्यादा, स्वीटी फुसफुसाकर बोली। ओ हो मैं तो आज गाने की परीक्षा लेने वाली थी, टीचर ने कहा। लेकिन बेचारी स्वीटी की तो ठीक से बोल भी नहीं पा रही थी। वह कैसे गा सकती थी। कुछ दिन बीते और एक दिन स्वीटी पैर पर पट्टी बाँधकर स्कूल आई। बेचारी स्वीटी ठीक से चल भी नहीं पा रही थी। और मजे की बात यह थी की उसी दिन स्कूल में खेलकूद की प्रतियोगिताएँ थी। सभी बच्चे भाग-दौड़ रहे थे और बेचारी स्वीटी एक और चुपचाप बैठी थी, उदास। तब टीचर ने उसे बुलाया और पूछा, स्वीटी तुम्हारी आँखों में तो दर्द नहीं हो रहा है ना? नहीं टीचर, अभी तक तो नहीं, स्वीटी बोली। अगर होगा न, तो आँखों पर भी पट्टी बाँध लेना। सब बच्चे जान जाएँगे कि तुम्हें अपने झूठ बोलने पर शर्म आने लगी है। टीचर ने कहा स्वीटी को अपनी गलती पर बहुत शर्म आई। उस दिन के बाद स्वीटी को फिर कभी दर्द के कारण पट्टी नहीं बाँधनी पड़ी।

6 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

आज के दिन अपनी माता जी के प्रति अपने स्नेह को खुल कर दिखाएंगे। परिवार में सुख और सुकून की प्राप्ति होगी। दांपत्य जीवन में थोड़ा तनाव रहेगा और जीवनसाथी किसी बात को लेकर गुस्से में दिखाई देगा।

वृषभ

इस राशि के वर्किंग लोगों को विशेष सफलता हासिल होगी। ऑफ़िस में किसी बड़े अधिकारी का सहयोग मिलेगा। इस राशि के व्यापारियों को आय के नए स्रोत मिलेंगे।

मिथुन

अगर आपका धन कहीं पर लंबे समय से फंसा हुआ है तो वह आज आपको वापस मिल सकता है। शनिदेव की कृपा से आपके रुके हुए सभी काम तेजी से पूरे होने लगेंगे।

कर्क

आज का दिन कई मायनों में आपके लिए बेहतर रहेगा। दांपत्य जीवन में खुशियां बढ़ेंगी और आपके बीच प्रेम और आकर्षण की वृद्धि होगी। किसी नई प्रॉपर्टी को खरीदने में रुचि जाग सकती है।

सिंह

आज ऑफिस में वर्कलोड ज्यादा हो सकता है। कैरियर के मामले में चीज़ें बेहतर होने के आसार है। परिवार के लोगों के साथ किसी बात पर थोड़ी बहस हो सकती है।

कन्या

आज कन्या राशि वालों के परिवार में प्रेम बढ़ेगा और आप जीवनसाथी के साथ अच्छा समय बिता सकते हैं। किसी भी नये कार्य को करने से पहले अपने बड़ो-बुजुर्गों की सलाह जरूर लें।

तुला

आज का दिन थोड़ा व्यस्त रहने वाला है। कार्यों में बिजी रहेंगे, जिसकी वजह से दिन कब गुजर जाएगा, पता ही नहीं चलेगा। हालांकि परिवार का वातावरण प्रसन्न रहेगा और आपको सुख की प्राप्ति होगी।

वृश्चिक

आज तरक्की के नये रास्ते खुलेंगे। शाम तक आपको कोई अच्छी खबर मिल सकती है। पारिवारिक जीवन खुशहाल बना रहेगा। माता-पिता के साथ धार्मिक स्थल पर जा सकते हैं।

धनु

आपका रुतबा और शोहरत दोनों बढ़ेगी। लंबे समय से चली आ रहीं सभी प्रकार की समस्याएं समाप्त होने वाली है। घर में चारो तरफ से खुशियां ही खुशियां आयेंगी।

मकर

आज का दिन आपके लिए मिला-जुला असर लेकर आएगा। व्यापार के सिलसिले में किए गए कार्य में सफलता मिलेगी। दांपत्य जीवन में चमत्कारिक रूप से प्रेम और आकर्षण की बढ़ोतरी होगी।

कुम्भ

आज आपका दिन फेवरेबल रहेगा। जीवनसाथी के साथ आपके संबंध मधुर बनेंगे। कार्यक्षेत्र में कुछ लोगों से पूरा-पूरा सहयोग मिलेगा। इनकम के नए रास्ते खुलेंगे।

मीन

आज नया वाहन या प्रॉपर्टी खरीदने की योजना बन सकती है। आपको कुछ घटनाओं की तह तक जाना पड़ेगा। आज का दिन आपके लिए खुशी और संतुष्टी भरा रहेगा।

किलर अंदाज में पठान से सामने आया शहरुख खान का पोस्टर

बॉलीवुड | मसाला

लंबे घुंघराले बाल और किलर अंदाज। शाहरुख खान का वही चार्म है और वही स्वैग। पठान से शाहरुख का नया पोस्टर रिलीज किया गया है। किंग खान के किलर एटीट्यूड पर उनके फैंस एक बार फिर मर मिटे हैं। लेकिन कई लोग ऐसे भी हैं, जो पठान से शाहरुख का पोस्टर देखकर गुस्से में आग बबूला हो गए और मेकर्स पर अपनी भड़ास निकाल रहे हैं। शाहरुख खान के फैंस उनकी फिल्म पठान को लेकर सुपर एक्साइटेड हैं। फैंस एक-एक दिन गिन रहे हैं कि कब शाहरुख की पठान रिलीज होगी और वो थिएटर में जाकर किंग खान के चार्म को एन्जॉय कर पाएंगे। पठान से शाहरुख के अब तक कई लुक और पोस्टर सामने आ चुके हैं, जिन्हें फैंस ने अपना बेशुमार प्यार दिया है।

शाहरुख के कई पोस्टर फैंस पहले ही देख चुके हैं। ऐसे में लोगों को उम्मीद थी कि अब तो फिल्म का कोई गाना रिलीज किया जाएगा। पठान के गाने सुनने के लिए फैंस बेताब हैं। लेकिन मेकर्स ने इस बार भी गाना रिलीज करने के बजाए फिल्म से किंग खान का नया पोस्टर रिलीज कर दिया, जिसे देखकर लोग मेकर्स पर भड़क रहे हैं। शाहरुख का अंदाज तो सभी को पसंद आ रहा है, लेकिन गाना रिलीज ना करने पर मेकर्स पर लोगों का गुस्सा फूट पड़ा है। पठान के नए पोस्टर में शाहरुख खान लंबे घुंघराले बालों में दिख रहे हैं। उन्होंने सनग्लासेस लगाए हैं। शाहरुख के फेस पर अलग ही चार्म है। पोस्टर के साथ लिखा गया है- अपनी कुर्सी की पेटी बांधलो। इससे दो दिन पहले भी फिल्म से शाहरुख का पोस्टर शेयर किया गया था, जिसमें किंग खान कंधे पर बंदूक रखकर फुल ऑन टशन में दिखे थे। पोस्टर देख-देखकर फैंस अब थक चुके हैं और वो कुछ नया चाहते हैं। फैंस को लगा था कि इस बार गाना रिलीज किया जाएगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ और इसी वजह से पठान के मेकर्स पर उनका गुस्सा फूट पड़ा है।

रिया चक्रवर्ती को मिला नया प्यार!

क्या रिया चक्रवर्ती की जिंदगी में फिर से बहार लौट आई है? जी हां, रिया चक्रवर्ती अपने रिलेशनशिप स्टेटस को लेकर चर्चा में बनी हुई हैं। ऐसी खबरे हैं कि एक्ट्रेस की जिंदगी में फिर से प्यार ने दस्तक दी है। रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि सुशांत सिंह राजपूत के निधन के ढाई साल बाद रिया को फिर से प्यार हो गया है।

रिया चक्रवर्ती एक ऐसी एक्ट्रेस हैं, जो अपनी प्रोफेशनल लाइफ से ज्यादा पर्सनल लाइफ को लेकर सुर्खियों में रहती हैं। खबरें हैं कि रिया अपनी जिंदगी में आगे बढ़ गई हैं। सुशांत सिंह राजपूत के निधन के बाद अब रिया को फिर से प्यार हो गया है और वो सीमा सजदेह के भाई बंटी सजदेह के साथ रिलेशनशिप में हैं। लेकिन वो इस बार अपने रिश्ते को पूरी तरह से प्राइवेट रखना चाहती हैं।

रिया के बॉयफ्रेंड और फेमस एक्टर सुशांत सिंह राजपूत का 2020 में निधन हो गया था। एक्ट्रेस की मौत के बाद रिया काफी मुश्किलों में थी। उनपर कई आरोप लगे थे। सुशांत के निधन के बाद रिया ने काफी मुश्किलों का सामना किया और अब धीरे-धीरे उनकी जिंदगी ट्रैक पर लौट रही है। खबरें हैं कि रिया सीमा सजदेह के भाई बंटी सजदेह को डेट कर रही हैं। सूत्र ने बताया- बंटी और रिया को साथ में खुश देखकर अच्छा लगता है। पिछले कुछ सालों में रिया ने जो कुछ भी झेला है, बंटी हमेशा उनके सपोर्ट सिस्टम रहे हैं। रिया की जिंदगी में जब चीजें बिगड़ रही थीं, तब बंटी उनके साथ खड़े रहे। सूत्र ने यह भी बताया कि रिया और बंटी दोनों साथ में हैं और अपनी लाइफ को प्राइवेट रखना चाहते हैं। बंटी रियलिटी स्टार और फैशन डिजाइनर सीमा सजदेह के भाई हैं।

बॉलीवुड | मन की बात

बालीवुड में मुझे काली बिल्ली कहते थे, लगता था मैं सुंदर नहीं : प्रियंका

प्रियंका चोपड़ा आज ग्लोबल आइकॉन बन गई हैं। लाखों दिलों की धड़कन और करोड़ों की इंस्पिरेशन प्रियंका ने कड़ी मेहनत से बड़ा मुकाम हासिल किया है। लेकिन एक समय था जब बॉलीवुड इंडस्ट्री में उनके साथ बुरा व्यवहार हुआ करता था। एक्ट्रेस ने अपना एक्टिंग डेब्यू तमिल फिल्म Thamizhan (2002) से किया था। इसके बाद उन्हें बॉलीवुड की फिल्मों में देखा गया। अब अपने नए इंटरव्यू में प्रियंका चोपड़ा ने बताया है कि कैसे शुरुआती दिनों में उन्हें अपनी स्किन के कलर की वजह से भेदभाव झेलना पड़ा था। उन्होंने बताया, मुझे काली बिल्ली और सांवली कहा जाता था। मेरा मतलब है सांवली का क्या होता है? वो भी उस देश में जिसमें सभी ब्राउन हैं। मुझे लगता था कि मैं सुंदर नहीं हूं। मैं सोचती थी कि मुझे दूसरों से ज्यादा कड़ी मेहनत करनी होगी, जबकि मुझे विश्वास था कि मैं अपने से हल्के स्किन कलर वाले एक्टर्स से ज्यादा टैलेंटेड थी। लेकिन उस समय मुझे लगता था कि ये सब ठीक है, क्योंकि यही नॉर्मल माना जाता था। उन्होंने आगे कहा, जाहिर है कि ये हमारे देश के औपनिवेशिक अतीत की वजह से है। अभी ब्रिटिश राज से निकल हमें 100 साल भी पूरे नहीं हुए हैं। तो मुझे लगता है कि हम अभी भी इन चीजों को खुद से जोड़े हुए हैं। लेकिन ये हमारी पीढ़ी पर निर्भर करता है, उनके अंदर क्षमता है इन चीजों को बदलने की ताकि आने वाली पीढ़ी हमसे विरासत में सिर्फ लाइट स्किन को अच्छा मानने की सीख ना ले। पिछले हफ्ते प्रियंका चोपड़ा को सऊदी अरब के रेड सी इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल 2022 में देखा गया था। अपने लुक्स के चलते वो सोशल मीडिया पर छाई हुई थीं। उनके प्रोजेक्ट्स की बात करें प्रियंका जल्द ही फिल्म लव अगेन में नजर आने वाली हैं।

दुनिया का सबसे रहस्यमयी झील, जिसे अलग अलग दिशाओं से देखने पर बदल जाता है आकार

इस धरती पर ऐसे-ऐसे रहस्य मौजूद हैं, जिनके बारे में वैज्ञानिक भी आज तक पता नहीं लगा पाए हैं। बहुत से रहस्य दुनियाभर की नदियों और झीलों में छिपे हुए हैं। कुछ झीलें ऐसी हैं जिनका पानी एकदम खारा है तो कुछ का एकदम मीठा। किसी झील से गर्म पानी निकलता है तो किसी से हमेशा धुंआ निकलता रहता है।

ऐसे ही एक झील के रहस्य के बारे में हम आपको बताने जा रहे हैं। जिस झील के बारे में हम बताने जा रहे हैं वह बहुत खूबसूरत है। इस झील की बनावट लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है। इसकी सबसे खास बात यह है कि जितनी अलग-अलग दिशाओं से इसे देखेंगे इसका आकार बदल जाता है। यह झील ताइवान में मौजूद है। यह सेंट्रल ताइवान के नानडू काउंटी के यूची टाउनशिप में स्थित है। इसे देखने के लिए हजारों सैलानी हर रोज पहुंचते हैं। इसका नाम सनमून है। अलग-अलग दिशाओं से देखने पर इसका आकार अलग-अलग दिखाई देता है। ताइवान की यह झील चारों तरफ पहाड़ियों से घिरी है। इसकी खासियत है कि अगर आप इसे पूर्व दिशा से देखेंगे तो आपको ये सूर्य के समान गोल दिखाई देगी। पश्चिम दिशा से देखने पर सनमून झील का आकार चंद्रमा के आधे भाग के समान दिखाई देता है। चूंकि इसका आकार सूरज और चंद्रमा की तरह है, इस वजह से इसका नाम सनमून झील रखा गया है।

अजब-गजब | बोकारो में है दुनिया का सबसे अनोखा कुंड

इसमें ताली बजाने से ऊपर आ जाता है पानी

आपने आज तक बहुत से जल कुंडों के बारे में सुना होगा। कई जल कुंडों की अपनी कहानी है। कोई जल कुंड अपने श्राप के लिए प्रसिद्ध है तो कोई भविष्य में आने वाली आपदा के बारे में संकेत देने के लिए। लेकिन क्या आपने कभी ऐसे कुंड के बारे में सुना है जिसके पास अगर आप ताली बजाए तो उसका पानी ऊपर आ जाता है इतना ही नहीं क्या आपने कभी ऐसा कुंड देखा है जो गर्मियों में ठंडा पानी देता है और सर्दियों में गर्म पानी। जाहिर सी बात है आपका जवाब ना होगा लेकिन हम आपको ऐसे ही कुंड के बारे में बताने जा रहे है।

झारखंड के बोकारो जिल में स्थित इस कुंड की खासियत है कि अगर आप अगर यहां पर ताली बजाएंगे तो पानी अपने आप ऊपर उठने लगता है। लोगों की मानें तो इस दौरान आपको ऐसा लगेगा कि जैसे किसी बर्तन में पानी उबल रहा है। बोकारो सिटी से 27 किलोमीटर दूर स्थित इस कुंड को लोग दलाही कुंड के नाम से जानते है। यह कुंड चारों तरफ से कंक्रीट की दीवारों से घिरा हुआ है। इस कुंड में नहाने लोग काफी दूर दूर से आते है। इस कुंड को लेकर कई रिसर्च हुए आखिर ताली बजाने से पानी ऊपर कैसे उठता है लेकिन कोई भी आज तक यह नहीं बता पाया कि आखिर इसका राज किया है।

दलाही कुंड के बारे में लोगों की मान्यता है कि इस कुंड के पानी में जो कोई भी मन्नत मागता है उसकी सारी मनोकामना पूरी हो जाती है। इतना ही नहीं कहा जाता है कि अगर कोई व्यक्ति इस कुंड में एक बाक नहां ले को उसे कभी चर्म रोग जैसी घातक बीमारी नहीं होती। इस कुंड का पानी एकदम साफ रहता है। वहीं वैज्ञानिकों का मानना है कि अगर इस कुंड में नाहने से चर्म रोग जैसी बीमारी नहीं होती तो इसका मतलब है कि इस कुंड के पानी में गंधक और हीलियम गैस मौजूद है। वहीं कुंड से निकला पानी एक नाले में जाता है जिसका नाम जमुई है। इसके बाद इस कुंड का पानी नाले से होता हुआ गरगा नदी में मिल जाता है। हालांकि आज तक कोई यह तो साबित नहीं कर पाया कि आखिर ताली बजाने से कुंड का पानी ऊपर कैसे आता है लेकिन वैज्ञानिकों का मानना है कि संभवत: ताली बजाने से जो ध्वनि तरंग उत्पन्न होती है उसके कारण ऐसा होता हो।

हिमाचल : चार साल बाद कांग्रेस ने चखा बड़ी जीत का स्वाद

» 2018 के बाद पहली बार अपने दम पर पाई किसी राज्य की सत्ता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

शिमला। गुरुवार को आए हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव के परिणाम देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस के लिए किसी संजीवनी से कम नहीं हैं। कभी पूरे देश में अपनी सत्ता से राज करने वाली कांग्रेस इस समय अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रही है। आलम ये है कि 2018 के बाद पहली बार कांग्रेस पार्टी ने ऐसी जीत हासिल की है, जिसके चलते वो अपने दम पर किसी राज्य में सत्ता में काबिज हो पाई है। इससे पहले साल 2018 में ही कांग्रेस के हाथ राजस्थान और छत्तीसगढ़ राज्य आए थे। उसके बाद से हर जगह कांग्रेस को सिर्फ निराशा ही मिल रही थी। ऐसे में हिमाचल के रूप में 4 साल बाद कांग्रेस के पास खुशी की एक बड़ी वजह है आई है उसको एक बड़ी जीत हासिल हुई है, जो पार्टी के लिए बेहद जरूरी थी।

कांग्रेस के लिए हिमाचल की ये जीत इसलिए भी काफी मायने रखती है, क्योंकि कांग्रेस ने भाजपा को सत्ता से बेदखल कर यहां पर सत्ता कब्जाई है। कांग्रेस के सत्ता में आते ही भाजपा का हिमाचल में हर पांच साल में सत्ता परिवर्तन का रिवाज बदलने का सपना भी चूर-चूर हो गया। कांग्रेस ने हिमाचल की 68 सीटों वाली विधानसभा में 40 सीटें हासिल कर सत्ता पाई, तो वहीं अब तक सत्ता पर काबिज भाजपा सिर्फ 25 सीटों पर ही सिमट गई।

फेल हुई भाजपा की हर चाल

दूसरी ओर भाजपा हर चुनाव की तरह यहां भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे पर ही मैदान में उतरी थी। दूसरी तरफ, वो अपने पांच सालों का रिपोर्ट कार्ड भी जनता के सामने पेश कर रही थी। जो कि परिणाम के बाद साफ ही है कि जनता को पसंद नहीं आया। वहीं भाजपा की केंद्र की योजनाएं और डबल इंजन सरकार की कवायद भी भाजपा को हिमाचल में हारने से नहीं बचा सकी। पुरानी पेंशन योजना, सेब उत्पादकों का गुस्सा और बीजेपी के पिछले चुनाव से पहले किए अपने वादे को पूरा न करने का फैसला इसकी बड़ी वजह रहे। बीते चुनाव से पहले बीजेपी ने वादा किया था कि हाईवे के चौड़ीकरण के लिए अधिग्रहित जमीन के बदले चौगुना मुआवजा दिया जाएगा। इन सारी वजहों से ही बीजेपी महज 25 सीटों पर ही जीत हासिल कर सकी। भाजपा ने हिमाचल की लड़ाई के पीछे अपना पूरा जोर झोंक दिया था। वहीं दूसरी ओर बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा ने मोर्चे का नेतृत्व किया क्योंकि यह उनका गृह राज्य है।

काम आई सीएम चेहरा घोषित न करने की रणनीति

हिमाचल चुनाव जीतना कांग्रेस के लिए एक साख की बात भी थी। क्योंकि एक तो यहां पर हर पांच साल में सरकार बदलने का रिवाज है, तो वहीं दूसरी ओर कांग्रेस ने हिमाचल में अपनी पूरी ताकत झोंक दी थी। पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी के लिए भी हिमाचल में अच्छा प्रदर्शन करने का दबाव था। ऐसे कांग्रेस की अपनी सभी रणनीति भी उसके काम आई। कांग्रेस अब अधिकतर बिना सीएम चेहरे के ही किसी भी राज्य के चुनाव में उतरती है। यहां भी कांग्रेस ने अपना ये ही दांव चला, जो कहीं न कहीं उसके लिए फायदेमंद भी साबित हुआ। सीएम चेहरा पेश घोषित न करना कांग्रेस के लिए तुरुप का इक्का साबित हुआ। कांग्रेस पार्टी के लिए यह दांव पूरी तरह से काम कर गया। क्योंकि इस बार सोनिया गांधी और राहुल गांधी जैसे शीर्ष नेताओं के चुनाव प्रचार नहीं करने के बावजूद कांग्रेस पार्टी को जीत हासिल हुई। इस बार कांग्रेस ने पूर्व दिवंगत मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह और लोगों से उनके भावनात्मक जुड़ाव के नाम पर चुनाव लड़ा था।

राष्ट्रपति ने महादेव का रुद्राभिषेक कर की दिन की शुरूआत, एलबीएस अकादमी मसूरी पहुंचीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने उत्तराखंड प्रवास के दूसरे दिन आज सुबह राजभवन स्थित राज प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर में विधिवत पूजा अर्चना के साथ रुद्राभिषेक किया। राष्ट्रपति ने राजभवन स्थित नक्षत्र वाटिका का उद्घाटन किया। इस दौरान राज्यपाल लेफ्टिनेंट जरनल गुरमीत सिंह (से.नि.) एवं प्रथम महिला गुरमीत कौर समेत मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी मौजूद रहे।

पूजा-अर्चना के बाद राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु 97वां आधारिक पाठ्यक्रम में शामिल होनी मसूरी पहुंचीं। सीएम पुष्कर सिंह धामी और राज्यपाल भी उनके साथ मसूरी पहुंचे। दूसरी ओर दून विश्वविद्यालय में तीसरे दीक्षांत समारोह की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। आज राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू विवि में 669 विद्यार्थियों को डिग्री प्रदान करेंगी। साथ ही मेधावी छात्र-छात्राओं को मेडल भी दिए जाएंगे। कार्यक्रम का लाइव प्रसारण स्कूल ऑफ मीडिया एंड कम्युनिकेशन के विद्यार्थियों और शिक्षकों की मदद से किया जाएगा। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुरेखा डंगवाल ने बताया कि राइजिंग नारी शक्ति की थीम पर आयोजित समारोह दोपहर दो बजे से शुरू होगा। कार्यक्रम के लाइव प्रसारण के लिए विवि की वेबसाइट पर लिंक उपलब्ध कराया जाएगा।

गोरखपुर : पति-पत्नी की संदिग्ध हालत में मौत, हत्या की आशंका

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गोरखपुर। पिपराइच थाना क्षेत्र के जंगल धूसड़ में आज सुबह टीन शेड के कमरे में पत्नी और 100 मीटर की दूरी पर पति का शव मिलने से सनसनी फैल गई। दोनों की अलग-अलग शव मिलने से हत्या की आशंका जाहिर की जा रही है। हालांकि,पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही मौत की वजह साफ हो पाएगी।सूचना मिलते ही पुलिस के आला अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल करने के बाद शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

जानकारी के मुताबिक,पिपराइच थाना क्षेत्र के जंगल धूसड़ के शिव मंदिर से दो मीटर दूरी पर हसनगंज निवासी संजय कुमार खेत में मकान बनवा कर रहते हैं। मकान से कु छ दूरी पर एक टीन शेड का कमरा भी बनाया है। उसी टीन शेड कमरे मे एक सप्ताह पहले पति-पत्नी के रूप में महिला पुरुष किराए पर लिया था। आज सुबह मकान मालिक ने महिला का शव कमरे में और पति का शव कमरे से 100 मीटर दूर पड़ा होने से पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पहुंची और जांच पड़ताल करने के बाद शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। बताया जा रहा है कि दोनों महाराजन जनपद के निवासी है। जिसकी उम्र लगभग 30 साल के अंदर है। आटो चला कर जिविका चलाया था।

नई आटो रिक्शा महेंद्र के नाम से है रजिस्टर्ड

जंगल धूसड़ में मिले पति पत्नी की शव के पास पिपराइच पुलिस ने एक नई टैपो बरामद की है जिसका रजिस्ट्रेशन गोरखपुर आरटीओ में 2 महीना 2 दिन पहले का है। पुलिस आटो को कब्जे में लेकर जांच कर रही है।

रेस्टोरेंट में भीषण आग लगने से ग्राहक की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में उस समय हड़कंप मच गया जब गुरुवार रात को शहर के चारबाग स्थित कबीर होटल के नीचे बने बेस्ट बिरियानी रेस्टोरेंट में अचानक आग लग गई। ये आग रात में खाना बनाते समय गैस सिलेंडर से गैस के रिसाव के कारण लगी। अचानक लगी इस आग ने देखते-देखते ही विकराल रूप ले लिया, जिससे आग की चपेट में आकर दो युवक गंभीर रूप से झुलस गए, जिसमें एक की मौत हो गई, जबकि एक का सिविल अस्पताल में गंभीर रूप में इलाज चल रहा है। आग लगने की सूचना पर पहुंची पुलिस व दमकल कर्मियों ने एक गाड़ी की मदद से एक घंटे में आग पर काबू पा लिया।

एडीसीपी मध्य राजेश श्रीवास्तव के मुताबिक, चारबाग स्थित कबीर होटल है। उसी के बेसमेंट में बेस्ट बिरयानी के नाम से रेस्टोरेंट है। होटल में अचानक आग लग गई। कबीर होटल में लगे उपकरणों से आग पर काबू पाए जाने का प्रयास किया जाने लगा। इसके साथ ही दमकल को सूचना दी गई। मौके पर पहुंचे दमकल कर्मियों ने एक गाड़ी की मदद से कुछ देर में आग पर काबू पा लिया। एडीसीपी के मुताबिक हादसे में रेस्टोरेंट में बिरयानी खाने आए लोग गंभीर रूप से झुलस गए, जिन्हें सिविल अस्पताल पहुंचाया गया। जहां नासिक निवासी प्रकाश सुधाकर दात्रे (30) को मृत घोषित कर दिया। वहीं साथी ही अनीस शेख उर्फ बादशाह 40 प्रतिशत झुलस गया। जिसका इलाज चल रहा है। एडीसीप ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। जांच करने के बाद कार्रवाई की जाएगी। एडीसीपी ने बताया कि मृतक अपने सात साथियों के साथ प्रतापगढ़ शादी में शामिल होने के लिए आए थे। बृहस्पतिवार को शादी से लौटने के बाद चारबाग स्थित होटल में रुके थे। बाकी साथी रंगोली होटल में आराम कर रहे थे। यह दोनों लोग देर शाम को बिरयानी खाने के लिए निकले थे।

आजम के करीबियों को तोड़ भाजपा ने लगाई 'गढ़' में सेंध

» रामपुर की जीत से गदगद है सत्तादल मगर विपक्ष बता रहा धांधली

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। गुरुवार को आए यूपी उपचुनाव के परिणाम एक ओर समाजवादी पार्टी के लिए खुशखबरी लेकर आए, मगर कभी सपा का गढ़ कहे जाने वाले रामपुर में पार्टी प्रत्याशी की हार और पहली बार भाजपा का जीतना सपा के जश्न को फीका भी कर गया। वहीं रामपुर को अपना किला बनाने वाले आजम खान के लिए भी ये हार किसी सदमे से कम नहीं है। पहले उपचुनाव में रामपुर लोकसभा सीट और अब विधानसभा सीट गंवाने के बाद रामपुर में आजम खान का घटते वर्चस्व उनके आगे के राजनीतिक करियर के लिए मुश्किलें पैदा कर सकता है। वहीं अपने राजनीतिक करियर के अंतिम पड़ाव पर उनके और समाजवादी के बीच भी रिश्तों में तल्खी बढ़ा सकता है। ऐसे में सवाल ये भी उठता है कि आखिर आजम खान के गढ़ रामपुर में भाजपा ने इतनी आसानी से कैसे सेंधमारी कर ली और लोकसभा के बाद विधानसभा में अपना कमल खिला लिया।

पूर्व मंत्री आजम खान और उनके परिवार ने बीते 36 वर्षों से रामपुर विधानसभा सीट को जिनके भरोसे अपना मजबूत सियासी किला बनाया था, भाजपा ने उन्हीं मुस्लिम वोटरों में सेंधमारी कर जीत हासिल कर ली। आजम की हेट स्पीच की वजह से खाली हुई इस सीट पर भाजपा का रणनीतिक कौशल कुछ ऐसा था कि उसने अपने वोटर सहेजने के साथ विपक्ष के वोट बैंक को भेदने पर भी काम किया। यही वजह है कि 60 प्रतिशत से ज्यादा मुस्लिम वोटर होने के बाद भी भाजपा ने रामपुर में जीत हासिल कर ली। भाजपा ने इसके लिए एक तगड़ी रणनीति बनाई और आजम खान कि चारों तरफ घेराबंदी कर उनको उनके ही गढ़ में पराजित किया।

उपचुनाव में कइयों ने बदला पाला

रामपुर जीतने के लिए भाजपा ने प्रदेश के साथ-साथ देश की सत्ता में होने का भी पूरा फायदा उठाया। साथ ही आजम खां के करीबियों को ही अपने खेमे में लाने की कवायद शुरू कर दी। भाजपा ने रामपुर में आजम के कई करीबियों को अपने पाले में कर उनका इस्तेमाल किया। आजम के पीआरओ रहे फसाहत अली खान, इरशाद महमूद, शाहबेज खान समेत कई भाजपा में आ गए। फसाहत ने कई मौकों पर आजम के बयानों का सटीक जवाब दिया। ये सभी आजम के चुनावी तौर-तरीकों को जानते थे। उन्हें जानकर भाजपा ने आजम के खिलाफ ही उनका इस्तेमाल किया। रामपुर की सांसद रह चुकीं जयाप्रदा को भी कभी आजम ने चुनाव लड़वाया था। बाद में आजम जयाप्रदा के विरोधी हो गए। भाजपा ने चुनाव प्रचार में उनका भी दर्द मंच से सबको सुनाया।

गहलोत और पायलट के बीच आग में घी डाल रहे आचार्य!

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस को हिमाचल में जहां जीत मिली है, तो वहीं गुजरात में करारी हार का सामना करना पड़ा है। इन दोनों राज्यों में अलग-अलग परिणाम से एक बार फिर इन राज्यों से इतर राजस्थान की सियासत गर्मा गई है। वहीं, कहीं न कहीं एक बार फिर कांग्रेस में गुटबाजी भी सामने आई है।

कांग्रेस नेता आचार्य प्रमोद कृष्णम ने हिमाचल की जीत और गुजरात की हार को राजस्थान से जोड़ते हुए ट्वीट किया कि युवा नेता सचिन पायलट हिमाचल के ऑब्जर्बर थे और हमारे अनुभवी नेता अशोक गहलोत गुजरात के, आगे मुझे कुछ नहीं कहना। दरअसल, सचिन पायलट को हिमाचल का स्टार प्रचारक बनाया गया था। यहां कांग्रेस ने शानदार जीत हासिल करते हुए राज्य में अपनी सरकार बनाई। वहीं राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को गुजरात की जिम्मेदारी सौंपी गई थी, जहां कांग्रेस को करारी हार का सामना करना पड़ा। ऐसे में अब आचार्य प्रमोद कृष्णम का इस तरह का बयान गुजरात सियासत और पायलट व गहलोत के बीच आग में घी डालने का काम करेगा। आचार्य प्रमोद ने इशारों-इशारों में सीएम गहलोत के फेल्योर को सामने रखा है और सचिन पायलट को हिमाचल की जीत का श्रेय दिया है। इससे पहले भी प्रमोद कृष्णम कई बार सचिन पायलट को राजस्थान का सीएम बनाने की मांग कर चुके हैं।

हिमाचल की जीत और गुजरात की हार पर प्रमोद कृष्णम ने दिया विवादित बयान

दूसरी ओर गुजरात चुनावों में हार की जिम्मेदारी लेते हुए प्रदेश प्रभारी रघु शर्मा ने इस्तीफा सौंप दिया है। वहीं गुजरात में हार पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भी बयान दिया। उन्होंने कहा कि भाजपा भले ही गुजरात में चुनाव जीत गई हो लेकिन वहां भारी सरकार विरोधी रुझान देखा गया, जिसका मतलब है कि कांग्रेस कहीं जिंदा है। हमें खुशी है कि सिद्धांतों और विचारधारा की लड़ाई कांग्रेस जीत गई है। हालांकि, गुजरात की हार को लेकर कई राजनीतिक जानकार गहलोत को भी इसका जिम्मेदार मान रहे हैं। क्योंकि जिस समय गहलोत की गुजरात में जरूरत थी, वो उस समय राजस्थान के सियासी घमासान में घिरे थे। जो कहीं न कहीं गहलोत का ही किया धरा था।

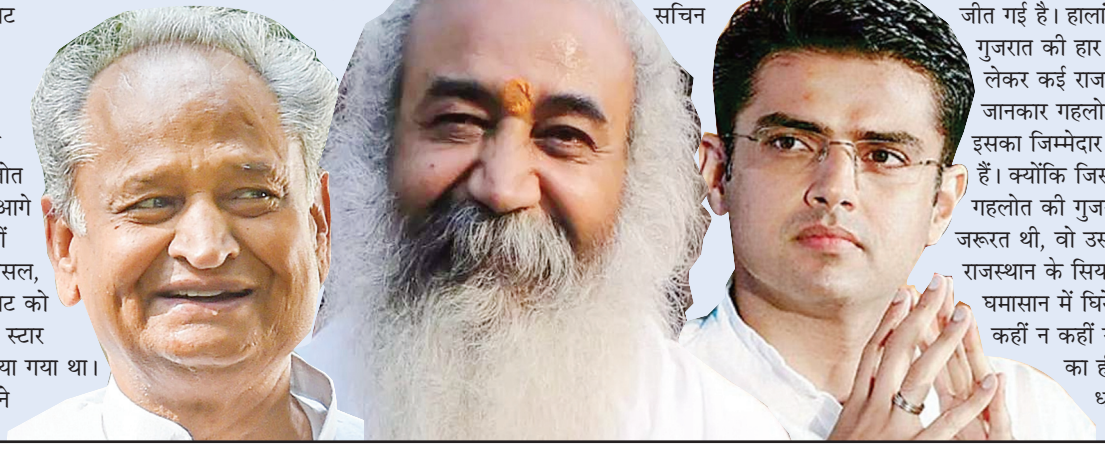

शिवपाल के कार्यालय से उतरा प्रसपा का झंडा ट्वीटर का बायो भी बदला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

» कार्यालय को बनाया शिविर कैंप

लखनऊ। मैनपुरी उपचुनाव में समाजवादी पार्टी को मिली ऐतिहासिक जीत के बाद अब एक बार फिर पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय मुलायम सिंह यादव का परिवार एक होता नजर आ रहा है। इसकी एक झलक कल उस समय देखने को मिली, जब सपा प्रमुख अखिलेश यादव यादव की पत्नी डिंपल यादव ने मुलायम सिंह यादव की मौत के बाद खाली हुई मैनपुरी चुनाव के उपचुनाव में ऐतिहासिक जीत हासिल की।

इस जीत के साथ ही प्रगतिशील समाजवादी पार्टी (प्रसपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवपाल सिंह यादव और समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने पुराने सारे गिले-शिकवों को भुलाकर एक-दूसरे को गले लगा लिया। इसके साथ ही शिवपाल यादव ने अपनी प्रगतिशील समाजवादी पार्टी का समाजवादी पार्टी में विलय करने का ऐलान भी कर दिया। तुरंत ही अखिलेश यादव ने चाचा शिवपाल यादव को साइकिल का झंडा थमाकर पार्टी में उनका स्वागत किया। आज शिवपाल यादव ने प्रसपा के कार्यालय से पार्टी का झंडा उतार दिया। जिसके साथ ही अब ये कार्यालय शिविर कैंप के नाम से जाना जाएगा। इतना ही नहीं शिवपाल यादव ने अपने ट्वीटर अकाउंट पर भी अपने बायो में खुद को समाजवादी पार्टी का नेता लिख दिया है। इससे अब ये साफ हो गया है कि चाच-भतीजा के बीच की सारी तल्खियां अब खत्म हो गईं हैं और मुलायम परिवार एक बार फिर एक हो गया है।

प्रसपा का सपा से विलय होते ही अखिलेश ने चाचा शिवपाल का पार्टी में स्वागत करते हुए कहा कि उनकी पार्टी का विलय होने से समाजवादी पार्टी की ताकत बढ़ेगी।

फोटो: 4पीएम

धरना राजकीय इंटर कॉलेज में चयनित अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र वितरित नहीं किये जाने को लेकर चयनित अभ्यर्थियों ने लखनऊ के माध्यमिक शिक्षा निदेशालय के सामने किया प्रदर्शन।

प्रदेश में तीन आईएएस अफसरों के तबादले

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में प्रशासनिक अधिकारियों के तैनाती स्थल में फेरबदल का क्रम लगातार जारी है। इसी क्रम में आज एक बार फिर 3 आईएएस अफसरों के तबादले किए गए। नए तबादलों में समाज कल्याण निदेशक राकेश कुमार को हटा दिया गया। अब राकेश कुमार को विशेष सचिव राजस्व बनाया गया है। इसके अलावा खेमपाल सिंह को सचिव परिवहन और रामनारायण यादव को विशेष सचिव सचिवालय प्रशासन नियुक्त किया गया है।

लखीमपुर हिंसा के पीड़ितों को इंसाफ तो दूर मुआवजा भी नहीं

» जयंत चौधरी ने राज्यसभा में उठाया मुद्दा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। राज्यसभा में आज लखीमपुर खीरी हिंसा मामले में मृतकों के परिजनों को मिलनी वाली सरकारी नौकरी और घायल किसानों को 10 लाख रुपये के मुवाजे में देरी का मुद्दा उठाया गया। शून्यकाल के दौरान रालोद के राष्ट्रीय अध्यक्ष जयंत चौधरी ने उच्च सदन में इस मुद्दे को उठाते हुए केंद्र सरकार से इस दिशा में समुचित कदम उठाने की मांग की।

जयंत ने कहा कि एक दिसंबर, 2021 को 'लखीमपुर नरसंहार' ने देश के किसानों को झकझोर कर रख दिया था, जिसकी चर्चा पूरे देश में हुई थी। उन्होंने कहा कि इस घटना के बाद उत्तर प्रदेश की सरकार ने आश्वासन दिया था कि घायलों को 10 लाख रुपये का मुआवजा और चार मृतक किसानों के परिजनों में से एक को सरकारी नौकरी दी जाएगी। इस घटना को एक साल बीत चुका है, लेकिन अब तक इस दिशा में कोई कार्रवाई नहीं हुई है। चौधरी ने इस दिशा में उचित कदम उठाने की मांग करते हुए सवाल उठाया कि सरकार यदि वादे पूरे न करे तो जनता क्यों उस पर विश्वास करे? इसके अलावा भी विभिन्न दलों के नेताओं द्वारा उच्च सदन में कई मुद्दे उठाए गए।

बिहार में महागठबंधन को झटके पे झटका

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

» नीतीश के मिशन 2024 के लिए शुभ संकेत नहीं हैं उपचुनाव के नतीजें

» विधानसभा की तीन में से दो सीटों पर मिल चुकी है करारी हार

लखनऊ। बिहार में उपचुनाव के नतीजों ने नीतीश कुमार और तेजस्वी यादव के गठजोड़ को दूसरा बड़ा झटका दिया है। बता दें कि, राज्य में महागठबंधन की सरकार बनने के बाद विधानसभा की तीन सीटों पर चुनाव हुए हैं, जिनमें से दो सीट भाजपा की झोली में गई हैं। गोपालगंज में जहां महागठबंधन की लालटेन नहीं जली वहीं, कुढ़नी में जदयू का तीर भी कमान से नहीं निकल सका। ऐसे में बिहार के महागठबंधन की ताकत बढ़ने के बजाए कमजोर होती दिखने लगी है, जो मिशन 2024 के लिहाज से प्रधानमंत्री की रेस के दावेदार नीतीश कुमार के लिए अच्छे संकेत नहीं हैं।

महागठबंधन की सरकार बनने के बाद नए समीकरणों की पहली परीक्षा मोकामा और गोपालगंज विधानसभा सीट के उपचुनाव में हुई थी। इसमें मोकामा सीट पर महागठबंधन के दल राजद ने जीत दर्ज की थी, लेकिन उसे गोपालगंज में भाजपा के हाथों करारी हार झेलनी पड़ी थी। महागठबंधन के दूसरे साथी जदयू हाल भी राजद की तरह ही कुढ़नी विधानसभा उपचुनाव के गुरुवार को आए नतीजों में देखा गया है। राजद से अधिक अंतर से जदयू कुढ़नी में भाजपा के हाथों पराजित हुई है। गोपालगंज में जहां करीब 2200 मतों से तेजस्वी के दल को शिकस्त में मिली थी, वहीं, नीतीश की पार्टी जदयू को कुछ समय बाद ही 3649 मतों से हार झेलनी पड़ी है। बिहार में महागठबंधन का यह हाल तब है जब जदयू, राजद, कांग्रेस के साथ ही कम्युनिस्ट पार्टियां एक साथ सरकार में शामिल हैं। बावजूद इसके पहले राजद और अब जदयू की करारी हार महागठबंधन के लिए शुभ संकेत नहीं है। ऐसे में लोकसभा चुनाव के मद्देनजर सत्ता में बैठें दलों को सूबे की जनता की नब्ज टटोलने के साथ ही नए सिरे से रणनीति बनाकर काम करना होगा। क्योंकि महागठबंधन को उपचुनाव में भाजपा से मिला दूसरा झटका किसी सदमे से कम नहीं है।

गोपालगंज में राजद तो कुढ़नी में बीजेपी ने जदयू को दी करारी शिकस्त

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **बबिता चतुर्वेदी** के लिए **4पीएम** आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। **प्रधान संपादक**- अर्चना दयाल, **संपादक** - संजय शर्मा, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।